सावित्री पर आधारित हिन्दी-प्रार्थनायें

{निवेदन : मांत्रिक-शक्ति तो केवल 'सावित्री' के मूलमंत्रों में ही निहित है}

Mother ने 1960 में एक आश्रमवासी (मोना सरकार) से बात करते समय **'सावित्री'** के बारे में कुछ गहन सत्य समझाये थे, जिनको उन्होंने अपनी स्मृति से लिख लिया। यह स्मृति-लिखित अंश 1967 में प्रकाशन के पूर्व **Mother** के सम्मुख रखे गये, जिसको पढ़कर उन्होंने प्रकाशन के लिये अनुमोदित किया। उसमें यह वाक्य हैं:

*"**Each verse of Savitri is like a Mantra** which surpasses all that man possessed by way of knowledge, and I repeat this, the words are expressed and arranged in such a way that the sonority of the rhythm leads you to the origin of sound, which is OM... It is of immense value – spiritual value and all other values; it is eternal in the subject, and infinite in its appeal, miraculous in its mode and power of execution; it is a unique thing, **the more you come in contact with this, the higher will you be uplifted**. Ah, truly it is something! **It is most beautiful thing he has left for man, the highest possible**."*

(Mother, 4.12.1967)

और, थियोसोफिकल सोसायटी की योगिनी एनी बेसेंट ने अपनी एक पुस्तक में मंत्रों के बारे में लिखा है:

"...A Mantra is a definite succession of sounds. Those sounds repeated rhythmically over and over again in succession, synchronise the vibrations of the vehicles into unity with themselves. ***Hence a Mantra can not be translated, translation alters the sounds****... If you translate the words, you may have a very beautiful prayer, but not a Mantra. Your translation may be beautiful inspired poetry, but it is not a living Mantra... The poetry, the inspired prayer, these are mentally translatable.* ***But a Mantra is unique and untranslatable****."*

(Annie Besant, Introduction to Yoga, 1908)

इस तरह, प्रथमत: यह स्पष्ट है कि 'सावित्री' श्रीअरविन्द की चेतना के उच्चतम स्तरों से अवतरित एक **मांत्रिक महाकाव्य** है, **जिसका पूर्ण आध्यात्मिक लाभ उसके मूलमंत्रों के सस्वर-उच्चारण अथवा श्रवण से ही मिल सकता है**। दूसरी बात यह कि **मंत्रों का अनुवाद सम्भव नहीं है**, मंत्रों पर आधारित प्रार्थनायें तो हो सकती हैं, किंतु अनुवाद कभी नहीं। **अत: यहां प्रस्तुत हिन्दी की रचनायें 'सावित्री' का अनुवाद नहीं हैं**, यह केवल हिन्दी में **'सावित्री' पर आधारित कुछ प्रार्थनायें मात्र** हैं।

'सावित्री' के गहन ज्ञान-आलोक में हम यह भूल जाते हैं कि 'सावित्री' मूलत: एक महाकाव्य है, सुन्दर लय में बहती हुई एक दिव्य-कविता ! 'सावित्री' का सस्वर-पाठ करते समय ही उसमें निहित इस लय का आनन्द प्राप्त होता है। **हिन्दी की इन पद्य-प्रार्थनाओं में 'सावित्री' की इसी लय (rhythm) के प्रति आग्रह है।** गद्य में तो मिलता-जुलता अनुवाद फिर भी किया जा सकता है, **परंतु पद्य में तो शत-प्रति-शत अनुवाद सम्भव ही नहीं है।** इस कारण से भी इसको अनुवाद, यहां तक कि भावानुवाद भी, नहीं कहना चाहिये। **'सावित्री' की मूल पंक्तियों के प्रति पूर्ण निष्ठा रखते हुए भी**, **हिन्दी में यह प्रार्थनायें तो 'सावित्री' के अर्थ का केवल लयबद्ध संकेत मात्र हैं** (only INDICATIVE meaning), यह अनुवाद नहीं हैं।

किसी भी मंत्र के स्पंदनों के दो अंश होते हैं– पहला **मंत्र की ध्वनि का स्पंदन**, जो बिना उस भाषा को जाने हुए भी श्रोता पर प्रभाव डालता ही है; और दूसरा **मंत्र के अर्थ का स्पंदन**, जो उस मंत्र के अर्थ अथवा ज्ञान को समझ लेने पर श्रोता के भीतर तक गूंजने लगता है, उस व्यक्ति को गहराई तक मंत्र से जोड़ देता है। **हिन्दी, अथवा अन्य भाषाओं के रूपान्तर, मंत्र के अर्थ को समझने में पाठक की सहायता करते हैं, इस तरह वे रूपान्तर मूल इंग्लिश 'सावित्री' से पाठक को अधिक गहराई से जोड़ते हैं। अत: यह अपूर्ण-प्रार्थनायें भी हिन्दी के पाठकों को उसी ओर जाने में सहायता करती हैं– 'सावित्री' के मूल इंग्लिश मंत्रों का सस्वर एवं अर्थपूर्ण उच्चारण !!**

इसके अतिरिक्त **एक और गहन सत्य** यह भी है कि हिन्दी में लिखी हुई पंक्तियां, हमारी अपनी मातृभाषा में बोली गई प्रार्थनायें बन जाती हैं ! हम सभी यह स्पष्ट अनुभूत करते हैं कि **मातृभाषा में बोली गई प्रार्थनाओं में बहुत अधिक सच्चाई होती है !! और Mother किसी भी भाषा में की गई सच्ची प्रार्थना को निश्चित रूप से सुन लेती हैं !!!**

जो हिन्दीभाषी अंग्रेज़ी भी जानते हैं, वे तो 'सावित्री' के इंग्लिश मूलमंत्र का सौभाग्य और मातृभाषा हिन्दी में प्रार्थना का सौभाग्य– दोनों ही लाभ ले सकते हैं ! हिन्दी-पाठकों से विनम्र निवेदन है कि यदि आप इंग्लिश जानते हैं, तो इन हिन्दी प्रार्थनाओं के द्वारा 'सावित्री' की मूल पंक्तियों के अर्थ का संकेत पाकर, **'सावित्री' के मूलमंत्रों का सस्वर-पाठ अवश्य करें।** **मांत्रिक-शक्ति तो सत्यत: केवल 'सावित्री' के मूलमंत्रों में ही निहित है, हिन्दी में प्रार्थनायें तो केवल मूल इंग्लिश 'सावित्री' तक पहुंचने की एक सीढ़ी मात्र है !!**

हर हिन्दी-प्रार्थना के साथ-साथ ही अंग्रेज़ी में 'सावित्री' की मूल पंक्तियां भी दी गई हैं। आरम्भ में मूल पंक्तियां तथा 'सावित्री' के Book Number, Canto Number, Page Number 'सावित्री' के प्रथम संस्करण First Edition (1950-51) पर आधारित थीं। किंतु AUROMA.ORG website पर 1993 के संशोधित संस्करण (AD) का संदर्भ दिया जाता है, अत: इस website पर आने के बाद सभी Book Number, Canto Number, Page Number 'सावित्री' के **1993** के संशोधित संस्करण (AD) पर आधारित हैं।

'सावित्री' की पंक्तियों के अर्थ को समझने के लिये **श्री नलिनी कान्त गुप्त, श्री MP पंडित, प्रो. मंगेश नादकर्णी, डा. आलोक पांडे** की पुस्तकों एवं व्याख्याओं की सहायता ली गई है। हिन्दी में शब्द-चयन के लिये आश्रम द्वारा प्रकाशित दो हिन्दी-अनुवादों– ***विद्यावती कोकिल*** (1982 संस्करण) एवं ***सुषमा गुप्ता*** (1996 संस्करण)– की सहायता ली गई है। इस Savitri website को बनाने में ***ऋतम् उपाध्याय*** की paintings का उपयोग किया गया है। इन सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं के प्रति गहन आभार !!

अंत में एक स्पष्ट स्वीकृति– **Mother की कृपा से ही इस गूंगे व्यक्ति को मातृभाषा हिन्दी में प्रार्थना के कुछ शब्द मिले हैं, मूकम् करोति वाचालम् !! तो यह सारी प्रार्थनायें Mother के श्रीचरणों में ही अर्पित हैं !!** 'सावित्री' के विशाल सागर में से कुछ बूंद पानी लेकर, 'सावित्री' के उसी विराट सागर को एक तुच्छ-सा अर्पण !!

अरुण पांडिचेरी **Update: 21 फरवरी 2023**

Savitri Hindi Prayers (SHP) are now digitally available on:

Auromaa.org/Sri Aurobindo/Savitri Hindi Translations/Savitri Prarthana by Arun (selections)

(The Website Link for the above is):

Savitri Prarthana by Arun (selections) -https://auromaa.org/savitri-by-sri-aurobindo-in-hindi/savitri-in-hindi-by-arun-chaturvedi/

And also, these SHP continue to be available on:

https://sites.google.com/view/savitrihindi/home

INDEX-54

[Note: The Reference **Book Number, Canto Number and Page Number** of these 54 Savitri Hindi Prayers (SHP) are based on **the 4th Revised Edition (AD) of Savitri,** CWSA (1993)].

Serial No. of Feb23-UPDATE	Savitri-AD Reference	Savitri Opening Line for the SHP
SHP-1 of Feb23	**B01 C01 P01 (AD)**	It was the hour before the Gods awake
SHP-2 of Feb23	**B01 C01 P04 (AD)**	Almost that day the epiphany was disclosed
SHP-3 of Feb23	**B01 C01 P05 (AD)**	A sacred yearning lingered in its trace
SHP-4 of Feb23	**B01 C02 P15 (AD)**	A deep of compassion, a hushed sanctuary
SHP-5 of Feb23	**B01 C02 P20 (AD)**	A magic leverage suddenly is caught
SHP-6 of Feb23	**B01 C03 P35 (AD)**	He comes unseen into our darker parts
SHP-7 of Feb23	**B01 C03 P35-36 (AD)**	Always the power poured back like sudden rain
SHP-8 of Feb23	**B01 C04 P47-48 (AD)**	In moments when the inner lamps are lit
SHP-9 of Feb23	**B01 C04 P49 (AD)**	It is the origin and the master-clue
SHP-10 of Feb23	**B01 C04 P52 (AD)**	But few can look beyond the present state

SHP-11 of Feb23	**B01 C04 P55 (AD)**	A few shall see what none yet understands
SHP-12 of Feb23	**B01 C04 P58-59 (AD)**	Yet a spiritual secret aid is there
SHP-13 of Feb23	**B02 C01 P101 (AD)**	A miracle of the Absolute was born
SHP-14 of Feb23	**B02 C04 P140-141 (AD)**	In the enigma of the darkened Vasts
SHP-15 of Feb23	**B02 C05 P163-164 (AD)**	This is the ephemeral creature's daily life
SHP-16 of Feb23	**B02 C05 P169 (AD)**	The world is other than we now think and see
SHP-17 of Feb23	**B02 C05 P170 (AD)**	Even in our sceptic mind of ignorance
SHP-18 of Feb23	**B02 C06 P197 (AD)**	Our being must move eternally through Time
SHP-19 of Feb23	**B02 C11 P275-276 (AD)**	She made earth her home, for whom heaven was too small
SHP-20 of Feb23	**B02 C12 P280 (AD)**	Far from our eager reach those summits live
SHP-21 of Feb23	**B02 C14 P290 (AD)**	An incense floated in the quivering air
SHP-22 of Feb23	**B03 C02 P312-313 (AD)**	Even while he stood on being's naked edge
SHP-23 of Feb23	**B03 C02 P314 (AD)**	At the head she stands of birth and toil and fate
SHP-24 of Feb23	**B03 C02 P315 (AD)**	Once seen, his heart acknowledged only her
SHP-25 of Feb23	**B03 C02 P315-316 (AD)**	But vain are human power and human love

SHP-26 of Feb23	**B03 C03 P333 (AD)**	It sent its voiceless prayer to the Unknown
SHP-27 of Feb23	**B03 C04 P345 (AD)**	O Truth defended in thy secret sun
SHP-28 of Feb23	**B04 C02 P364 (AD)**	Her will was puissant on their nature's acts
SHP-29 of Feb23	**B04 C03 P370-371 (AD)**	O Force-compelled, Fate-driven earth-born race
SHP-30 of Feb23	**B04 C03 P375 (AD)**	As when the mantra sinks in Yoga's ear
SHP-31 of Feb23	**B05 C03 P406 (AD)**	In one great hour of the unveiling gods
SHP-32 of Feb23	**B05 C03 P407-408 (AD)**	I looked upon the world and missed the Self
SHP-33 of Feb23	**B05 C03 P408 (AD)**	For here are secret spaces made for thee
SHP-34 of Feb23	**B06 C02 P442-443 (AD)**	Was then the sun a dream because there is night
SHP-35 of Feb23	**B06 C02 P443 (AD)**	By pain and joy, the bright and tenebrous twins
SHP-36 of Feb23	**B06 C02 P448 (AD)**	Yes, there are happy ways near to God's sun
SHP-37 of Feb23	**B06 C02 P457 (AD)**	The will of the Timeless working out in time
SHP-38 of Feb23	**B06 C02 P459-460 (AD)**	This world was not built with random bricks of Chance
SHP-39 of Feb23	**B07 C02 P476 (AD)**	The Voice replied: "Remember why thou cam'st
SHP-40 of Feb23	**B07 C02 P486-487 (AD)**	But for such vast spiritual change to be

SHP-41 of Feb23	**B07 C04 P503-505 (AD)**	Here from a low and prone and listless ground
SHP-42 of Feb23	**B07 C04 P507-508 (AD)**	And Savitri heard the voice, the echo heard
SHP-43 of Feb23	**B07 C05 P526 (AD)**	But since She knows the toil of mind and life
SHP-44 of Feb23	**B07 C05 P528 (AD)**	In its deep lotus home her being sat
SHP-45 of Feb23	**B07 C05 P529 (AD)**	A channel of the mighty Mother's choice
SHP-46 of Feb23	**B07 C05 P531 (AD)**	Then lifts the mind a cry of victory
SHP-47 of Feb23	**B07 C06 P537-538 (AD)**	Banish all thought from thee and be God's void
SHP-48 of Feb23	**B07 C06 P542 (AD)**	Although his ego claims the world for its use
SHP-49 of Feb23	**B10 C03 P634 (AD)**	But Savitri replied to the dire God
SHP-50 of Feb23	**B10 C04 P644 (AD)**	How shalt thou bring the Everlasting here
SHP-51 of Feb23	**B11 C01 P704-705 (AD)**	Abandoning the dubious Middle Way
SHP-52 of Feb23	**B11 C01 P708-710 (AD)**	When superman is born as Nature's king
SHP-53 of Feb23	**B12 Epilogue P720 (AD)**	For not for ourselves alone our spirits came
SHP-54 of Feb23	**B12 Epilogue P723-724 (AD)**	If this is she of whom the world has heard

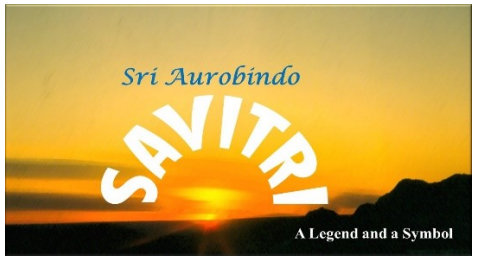

Savitri B01 C01 P01 (AD)

It was the hour before the Gods awake.

Across the path of the divine Event

The huge foreboding mind of Night, alone

In her unlit temple of eternity,

Lay stretched immobile upon Silence' marge.

SHP-1 of Feb23

जागते जब **'देव'** उसके पूर्व की थी वह घड़ी !

'दिव्य-विधि' के मार्ग में पथ रोककर फैला हुआ

'असत्-रजनी' का अकेला भासता-भावी मनस्

बिन-दीप मंदिर में जहां चिरकाल से थी कालिमा !!

'शून्य' के तट पर अचल वह ठेठ था पसरा हुआ ।।

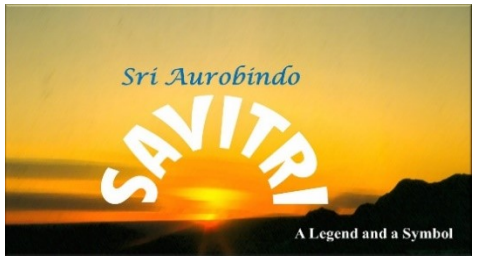

Savitri B01 C01 P04 (AD)

Almost that day the epiphany was disclosed
Of which our thoughts and hopes are signal flares;
A lonely splendour from the invisible goal
Almost was flung on the opaque Inane.

Once more a tread perturbed the vacant Vasts;
Infinity's centre, a Face of rapturous calm
Parted the eternal lids that open heaven;
A Form from far beatitudes seemed to near.

SHP-2 of Feb23

हो गया प्राय: प्रकट ही भेद उस दिन सृष्टि का !
चिन्गार-से संकेत जिसके धारणा-आशा सभी
उस अगोचर-लक्ष्य से वह एक आती **'भव्यता'**—
फेंक जैसे दी गई इस **'अचित्-तामस-गर्त'** में !

एक **'पगध्वनि'** ने हिलाया— रिक्त उस **'विस्तार'** को
'शांत-मुख-आनन्दमय', **'निस्सीम'** के उस केन्द्र ने—
नित्य-पलकों को उठा कर द्वार खोले स्वर्ग के
दूर सुख के धाम से इक **'रूप'** आता सन्निकट !

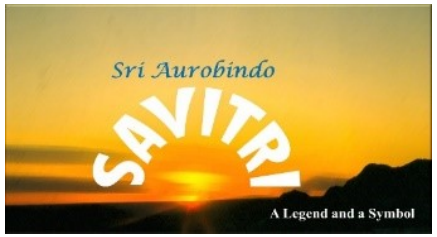

Savitri B01 C01 P04 (AD)

Ambassadress twixt eternity and change,

The omniscient Goddess leaned across the breadths

That wrap the fated journeyings of the stars

And saw the spaces ready for her feet.

SHP-2 of Feb23

'देवदूती' जो सनातन और वर्तन मध्य में !

विस्तार हर-दिश पर झुकी वह **'देवि'** ज्ञाता-सर्वत: !

सकल तारों के नियत-पथ जो समेटे **'आत्म'** में !

और देखे क्षेत्र वे जो **'चरण-तत्'** उत्सुक खड़े !!

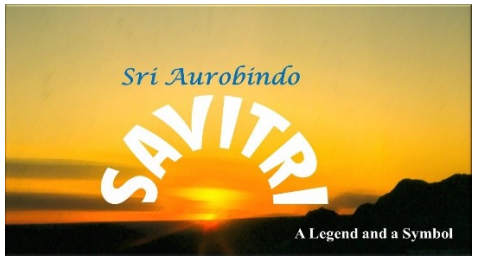

Savitri B01 C01 P05 (AD)

A sacred yearning lingered in its trace,

The worship of a Presence and a Power

Too perfect to be held by death-bound hearts,

The prescience of a marvellous birth to come.

SHP-3 of Feb23

बस अभीप्सा गहन-पावन, शेष पीछे रह गई–

'उस-उपस्थिति', **'शक्ति-तत्'** की वंदना-आराधना !!

'परिपूर्णता', यमपाश-उर की बद्ध-सीमा से परे,

आभास देती– जन्म जो आता चमत्कारी यहां !!

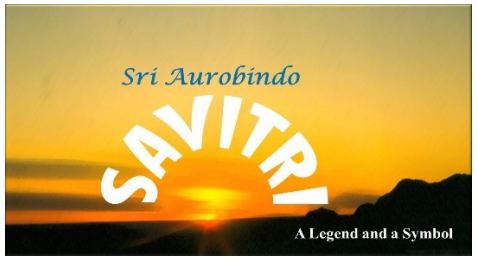

Savitri B01 C02 P15 (AD)

A deep of compassion, a hushed sanctuary,

Her inward help unbarred a gate in heaven;

Love in her was wider than the universe,

The whole world could take refuge in her single heart.

SHP-4 of Feb23

गहन करुणा से भरी, जस शांत-आश्रयस्थली !

आंतरी **'उसका'** सहारा द्वार खोले स्वर्ग का !

सृष्टि-सारी से वृहत्तर **'प्रेम-उसका'** व्याप्त था !

पा सके जग-सकल आश्रय, **'एक-अंतर'** में वहां !!

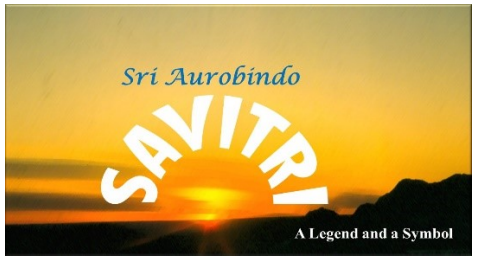

Savitri B01 C02 P20 (AD)

A magic leverage suddenly is caught

That moves the veiled Ineffable's timeless will:

A prayer, a master act, a king idea

Can link man's strength to a transcendent Force.

Then miracle is made the common rule,

One mighty deed can change the course of things;

A lonely thought becomes omnipotent.

SHP-5 of Feb23

उत्तोल सहसा हाथ लगता दिव्य-जादू से भरा !

जो हिलाता **'अलख-प्रभु'** की टेक-कालातीत को—

ज्ञान-अनुपम, कर्म-दैवी, या कि गहरी-प्रार्थना !!

जोड़ देती मनुज-बल को उस **'परात्पर-शक्ति'** से !!

सामान्य तब बनता नियम, अद्भुत्-चमत्कारी यहां !

नियति-भावी बदल जाती एक उत्कट-कृत्य से !

सर्वबल-सम्पन्न बनती मात्र-एकल-धारणा !!

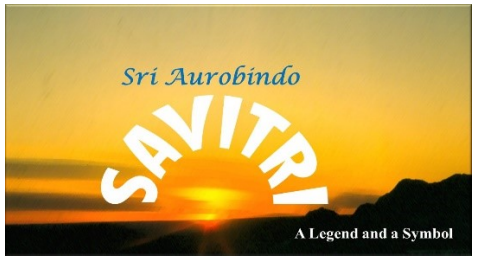

Savitri B01 C03 P35 (AD)

He comes unseen into our darker parts

And, curtained by the darkness, does his work,

A subtle and all-knowing guest and guide,

Till they too feel the need and will to change.

All here must learn to obey a higher law,

Our body's cells must hold the Immortal's flame.

SHP-6 of Feb23

अलख आता **'वह'** हमारे अंधतर हर-अंग में

औ' छिपा उस अंधपट से कार्य-निज करता **'वही'**

पथप्रदर्शक, सर्वज्ञाता, सूक्ष्म रहता **'वह'** अतिथि—

अंग जबतक चाहते खुद मांगते रूपान्तरण !

सीख लें यह अंग सारे उच्च-ऋत को मानना !

धर सकें तन-कोश तक भी उस **'अमर'** की अग्नि को !!

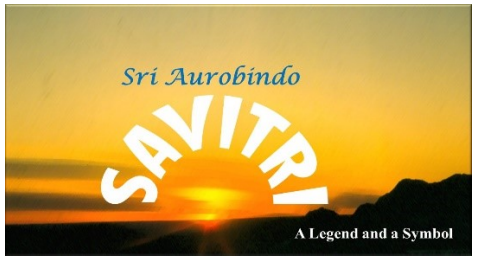

Savitri B01 C03 P35 (AD)

Else would the spirit reach alone its source

Leaving a half-saved world to its dubious fate.

Nature would ever labour unredeemed;

Our earth would ever spin unhelped in space,

And this immense creation's purpose fail

Till at last the frustrate universe sank undone.

SHP-6 of Feb23

अन्यथा तो— आत्मा एकल पहुंचती स्त्रोत पर

त्याग जग को अर्धरक्षित, भ्रष्ट उसकी नियति पर ।

श्रम करेगी तब प्रकृति उद्धार की आशा-बिना,

तब दिशाओं में सदा असहाय घूमेगी धरा,

लक्ष्य होगा तब निरर्थक इस असीमित सृष्टि का,

अंत में तब डूब जायेगा अकारथ-विश्व भी ।।

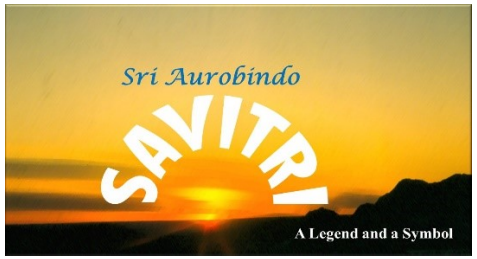

Savitri B01 C 03 P35-36 (AD)

Always the power poured back like sudden rain,
Or slowly in his breast a presence grew;
It clambered back to some remembered height
Or soared above the peak from which it fell.

Each time he rose there was a larger poise,
A dwelling on a higher spirit plane;
The Light remained in him a longer space.

SHP-7 of Feb23

मेघ-सी नित-दिन अचानक बरस जाती **'शक्ति'** थी !
या हृदय में **'वह-उपस्थिति'** मंद-मंथर बढ़ रही !
याद कर भूले शिखर, वह पुन: चढ़ता था वहां !
अधिक-ऊपर उड़ चला वह जिस शिखर से था गिरा !

हर बार उठता तो महत्तर-संतुलन आता वहां !
वह ठहरता और-ऊंचे आत्मा-विस्तार पर !
'ज्योति' टिकती थी मनुज में और-लंबे काल तक !

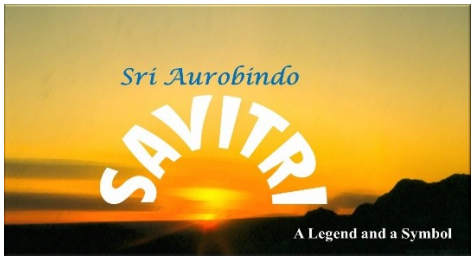

Savitri B01 C 03 P35-36 (AD)

In this oscillation between earth and heaven,
In this ineffable communion's climb
There grew in him as grows a waxing moon
The glory of the integer of his soul.

A union of the Real with the unique,
A gaze of the Alone from every face,
The presence of the Eternal in the hours
Widening the mortal mind's half-look on things,
Bridging the gap between man's force and Fate
Made whole the fragment-being we are here.

SHP-7 of Feb23

झूला पतन-उत्थान का, सुरलोक-धरती बीच में !
'सम्पर्क' के आरोह से, जो मनुज-वाचा से परे,
वृद्धि उसमें यूं हुई, ज्यों चंद्र की बढ़ती-कला–
आत्मा की पूर्णता की दीप्त-महिमा-दिव्यता !

योग **'तत्-सत्'** का हुआ, उस विरल-न्यारे-व्यक्ति से,
देखता प्रत्येक मुख से **'परम-एकम्'** अब यहां,
अब उपस्थिति **'चिर-अमर'** की बीतते इस काल में
वृहत्-व्यापक बन गई संकीर्ण-मानव-बुद्धि भी,
सेतु बनता गर्त पर, मनुशक्ति-**'विधि'** के बीच में—
खंड-सत्ता-मानवी पाती धरा पर पूर्णता !

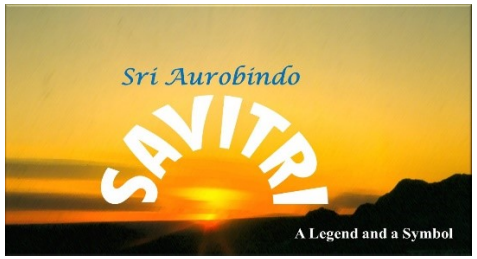

Savitri B01 C 03 P35-36 (AD)

At last was won a firm spiritual poise,

A constant lodging in the Eternal's realm,

A safety in the Silence and the Ray,

A settlement in the Immutable.

SHP-7 of Feb23

जीत पाया अंत में दृढ़ गहन-आत्मिक-संतुलन !

'लोक-शाश्वत' में मनुज वह नित्य-वासी बन गया !

पा लिया इक अभय-आश्रय, **'उस-किरण'**, **'उस-शून्य'** में—

'परम-अक्षर' में सतत आवास-अक्षय मिल गया !!

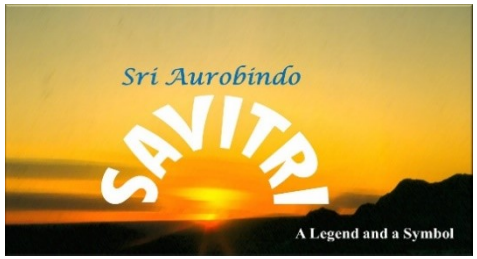

Savitri B01 C04 P47-48 (AD)

In moments when the inner lamps are lit
And the life's cherished guests are left outside,
Our spirit sits alone and speaks to its gulfs.

A wider consciousness opens then its doors;
Invading from spiritual silences
A ray of the timeless Glory stoops awhile
To commune with our seized illumined clay
And leaves its huge white stamp upon our lives.

SHP-8 of Feb23

जिन क्षणों में अंतरों में दीप-पावन जल उठें !
और घर-बाहर निकालें— अतिथि, जीवन के प्रियम् !!
आत्मा निस्संग बैठी, बोलती निज-थाह से ।

खोल देती द्वार उसके एक विस्तृत चेतना,
आत्म-नीरव-मौन से वह सदय-धावा बोलती
तब उतरती किरण-एकल **'तेज-शाश्वत-सूर्य'** से !
बात करने, दीप्त धारित मनुज-माटी के लिये !
छाप-व्यापक श्वेत-निज-पद छोड़ जाती जन्म पर !!

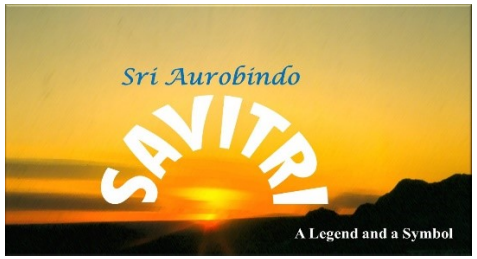

Savitri B01 C04 P49 (AD)

It is the origin and the master-clue,

A silence overhead, an inner voice,

A living image seated in the heart,

An unwalled wideness and a fathomless point,

The truth of all these cryptic shows in Space,

The Real towards which our strivings move,

The secret grandiose meaning of our lives.

SHP-9 of Feb23

आदि है उद्‌गम यही औ' है महत्-संकेत भी !

शीर्ष-ऊपर शून्य-नीरव, दिव्य-वाणी-आन्तरी !

मूर्ति अंतर में विराजित जागती-जीवंत-सी !

बिंदु गहन-अथाह भी, विस्तार-सीमाहीन भी !

इस सकल **'ब्रह्मांड'** में इति-सत्य लीला-गूढ़ का !!

'सत्य' जिसकी ओर बढ़ते यत्न सारे मानवी !

गुप्त-आवृत, भव्य-दैवी, अर्थ जीवन का यही !!

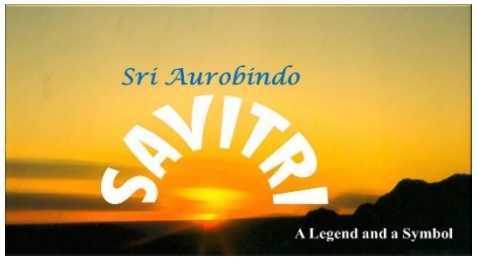

Savitri B01 C04 P52 (AD)

But few can look beyond the present state

Or overleap this matted hedge of sense.

All that transpires on earth and all beyond

Are parts of an illimitable plan

The One keeps in his heart and knows alone.

SHP-10 of Feb23

अद्य-स्थिति-पार को तो देख पाते अल्प ही !

लांघ पाते अल्प ही इस जटिल इंद्रिय-बाड़ को !

घटित होता जो धरा पर, अन्य लोकों में कहीं—

भाग वह सब है यहां इक योजना-निस्सीम का !

रखे उर-निज **'परम-एकम्'** औ' अकेला जानता !!

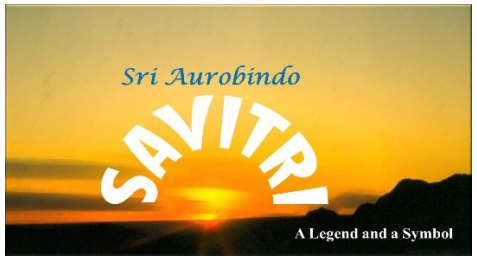

Savitri B01 C04 P55 (AD)

SHP-11 of Feb23

A few shall see what none yet understands;

God shall grow up while the wise men talk and sleep;

For man shall not know the coming till its hour

And belief shall be not till the work is done.

कुछ देख पायेंगे उसे जिसको न कोई जानता,

जब तर्क-करते-विज्ञ-सोते, **'ईश'** बढ़ता जायेगा !

क्योंकि मानव आगमन तक जान पायेगा नहीं,

विश्वास तो होगा तभी जब कार्य कृत हो जायेगा !!

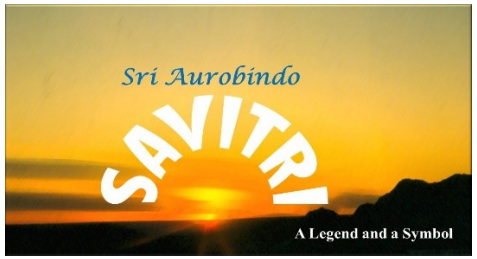

Savitri B01 C04 P58-59 (AD)

Yet a spiritual secret aid is there;
While a tardy Evolution's coils wind on
And Nature hews her way through adamant
A divine intervention thrones above.

Alive in a dead rotating universe
We whirl not here upon a casual globe
Abandoned to a task beyond our force;
Even through the tangled anarchy called Fate
And through the bitterness of death and fall
An outstretched Hand is felt upon our lives.

SHP-12 of Feb23

और फिर भी गुप्त-दैवी इक सहारा है यहां !
एक मंथर-वर्धना की कुंडली खुलती यहां !
और प्रकृति भेदती है मार्ग पत्थर काट कर !
आसीन ऊपर **'दिव्यता'**, जो पथ बदल देती यहां !!

जी रहे इस चक्रवत् निर्जीव-से ब्रह्मांड में
घूमते हम तो नहीं संयोग-गोलक पर यहां !
त्यक्त-जैसे, कार्य जो सीमा-हमारी से परे;
इस जटिल-अंधेर में जो **'भाग्य'** कहलाता यहां !
औ' पतन की, मृत्यु तक की, हार-कटुता-मध्य में !
एक **'व्यापी-हाथ-वरप्रद'**, भास होता जन्म पर !!

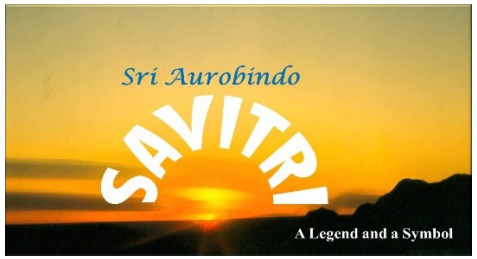

Savitri B01 C04 P58-59 (AD)

SHP-12 of Feb23

It is near us in unnumbered bodies and births;

In its unslackening grasp it keeps for us safe

The one inevitable supreme result

No will can take away and no doom change,

The crown of conscious Immortality,

The godhead promised to our struggling souls

When first man's heart dared death and suffered life.

साथ रहता **'वह'** हमारे जन्म-अगणित-देह में !

दृढ़-पकड़, रखता सुरक्षित, **'वह'** हमारे ही लिये

परिणाम जो निश्चित-अटल, जो चरम-अंतिम है यहां—

दुर्भाग्य ना सकता बदल, ना ले सके दुर्भावना—

वह **'अमरता'** का मुकुट, सम्पूर्ण-चेतन-रूप में !!

जूझती इन आत्माओं को मिला था हरि-वचन !

झेल कर दु:ख जन्म के जब मरण मनु ने था सहा !

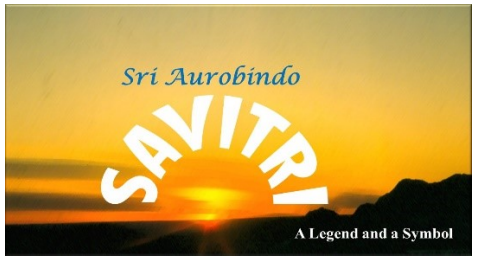

Savitri B01 C04 P58-59 (AD)

SHP-12 of Feb23

One who has shaped this world is ever its lord:

Our errors are his steps upon the way;

He works through the fierce vicissitudes of our lives,

He works through the hard breath of battle and toil,

He works through our sins and sorrows and our tears,

His knowledge overrules our nescience;

जिसने गढ़ा इस सृष्टि को, शासक **'वही'** तो है सदा

भूलें हमारी मार्ग पर, आगे बढ़ाता **'वह'** कदम;

'वह' संभाले जीवनों के विषम-भाटा-ज्वार को !

'वह' संभाले डूबती-सी युद्ध-श्रम-हत-सांस को !

'वह' संभाले सब हमारे पाप-पीड़ा-अश्रु को !

मानवी-निश्चेतना को **'वह'** मिटाता ज्ञान से !

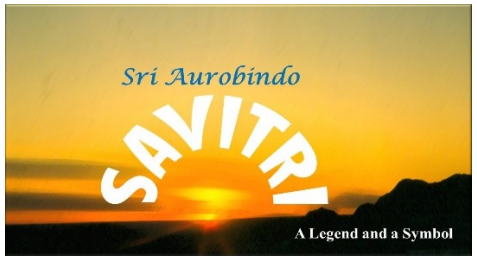

Savitri B01 C04 P58-59 (AD)

Whatever the appearance we must bear,

Whatever our strong ills and present fate,

When nothing we can see but drift and bale,

A mighty Guidance leads us still through all.

After we have served this great divided world

God's bliss and oneness are our inborn right.

SHP-12 of Feb23

चाहे हमारी रूप-छाया जो लगे, जैसी दिखे !

चाहे हमारे दोष-भीषण, भाग्य कैसा भी अभी !

जब दिखे-ना कुछ हमें इस-धार-में-मंझधार-में—

ले चले तब भी हमें **'वह-शक्त-दृष्टा'** साथ में !!

कार्य जब पूरा हमारा— खंड-खंडित-जगत् में,

अधिकार तब जन्मज हमारा— **'हर्ष-भगवत्-एकता'** !!

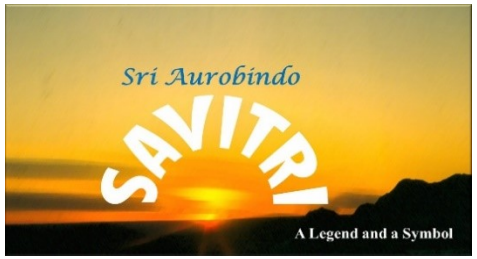

Savitri B02 C01 P101 (AD)

A miracle of the Absolute was born;

Infinity put on a finite soul,

All ocean lived within a wandering drop,

A time-made body housed the Illimitable.

To live this Mystery out our souls came here.

SHP-13 of Feb23

'तत्-परम' की चमत्कारी प्रकट इक घटना हुई—

'विशद्-व्यापक-नित्यता' इक सान्त-आत्मा बन गई !

जी उठा **'सम्पूर्ण-सागर'**, एक भ्रमती-बूंद में !

काल-जायी देह में इक घर बना **'निस्सीम'** का !

आत्मायें आ गईं यह **'भेद'** जीने के लिये !!

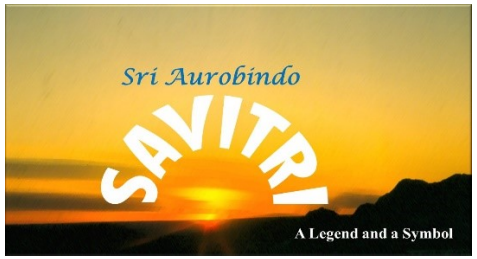

Savitri B02 C04 P140-141 (AD)

In the enigma of the darkened Vasts,

In the passion and self-loss of the Infinite

When all was plunged in the negating Void,

Non-Being's night could never have been saved

If Being had not plunged into the dark

Carrying with it its triple mystic cross.

SHP-14 of Feb23

घोर जब डूबी तमस् में सृष्टि की व्यापक पहेली

होम दी **'निस्सीम'** ने आवेग-आहुति, आत्म की

जब सकल ब्रह्मांड डूबा **'निष्प्रयोजन-शून्य'** में,

तो कभी भी बच न पाती असत्-सत्ता की निशा !!

यदि तमस् में ना उतरती **'परम-सत्ता'** की कृपा !!

साथ लेकर गूढ़-गोपित त्रिविध अपने क्रूस को ।

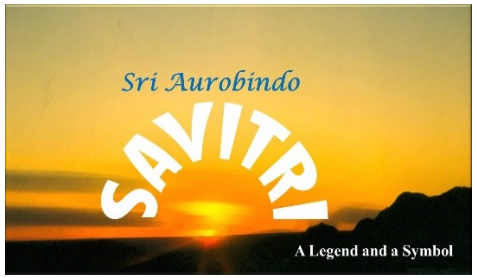

Savitri B02 C04 P140-141 (AD)

Invoking in world-time the timeless truth,

Bliss changed to sorrow, knowledge made ignorant,

God's force turned into a child's helplessness

Can bring down heaven by their sacrifice.

SHP-14 of Feb23

दिक्काल में आहूत करके सत्य-कालातीत को

ज्ञान तो अज्ञान में, आनन्द दु:ख में ढल गया

शक्ति **'प्रभु'** की, एक शिशु-सी, क्षीण-नत-बेबस बनी—

बलिदान; नीचे इस धरा पर, स्वर्ग लाने के लिये ।।

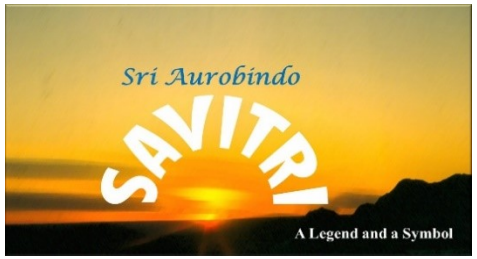

Savitri B02 C05 P163-164 (AD)

This is the ephemeral creature's daily life.

As long as the human animal is lord
And a dense nether nature screens the soul,
As long as intellect's outward-gazing sight
Serves earthy interest and creature joys,
An incurable littleness pursues his days,
Ever since consciousness was born on earth,
Life is the same in insect, ape and man,
Its stuff unchanged, its way the common route.

SHP-15 of Feb23

जीव-भंगुर जी रहा नितदिन यही जीवन यहां ।

नाथ उसका एक नरपशु जब बना रहता यहां
औ' सघन-प्रकृति-अधम जब घेर रखती आत्मा
बुद्धि जबतक देखती है, दृष्टि बाहर-लीन हो
साधती है— हर्ष-प्राणिक, हेतु-लौकिक ही यहां
तब पकड़ती मनु-दिनों को— एक दुष्कर क्षुद्रता
चेतना ने इस धरा पर जन्म जब से है लिया !
कीट में, पशु में, मनुज में— प्राण तो बसता वही !!
तत्व बदला है नहीं औ' मार्ग भी सामान्य है !!

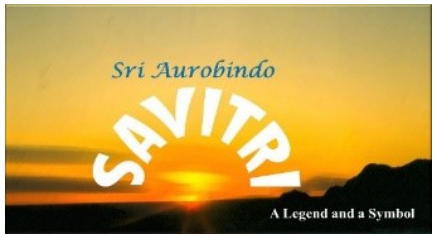

Savitri B02 C05 P163-164 (AD)

If new designs, if richer details grow
And thought is added and more tangled cares,
If little by little it wears a brighter face,
Still even in man the plot is mean and poor.

A gross content prolongs his fallen state;
His small successes are failures of the soul,
His little pleasures punctuate frequent griefs:
Hardship and toil are the heavy price he pays
For the right to live and his last wages death.

SHP-15 of Feb23

नव-नमूने, बहुल-ब्योरे, अगर बढ़ते भी यहां
मनन-क्षमता आ जुड़े जो जटिल-चिन्ता भी करे
और क्रमश: रूप उसका अधिक उज्ज्वल भी लगे
किंतु तब भी मनु-कथानक, दीन-कंगला है यहां!

तोष-लौकिक दीर्घ करता पतित उसकी वृत्ति को!!
क्षुद्र उसकी लब्धियां तो हैं विफलता आत्म की!!
दु:खप्राय-जीवन में लगाता— बिंदु वह लघु-हर्ष के
कष्ट से, श्रम से चुकाता मूल्य वह भारी यहां—
अधिकार जीने का मिले! फिर अंत-वेतन मृत्यु है!

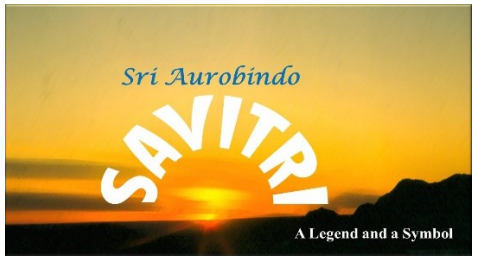

Savitri B02 C05 P163-164 (AD)

An inertia sunk towards inconscience,

A sleep that imitates death is his repose.

A puny splendour of creative force

Is made his spur to fragile human works

Which yet outlast their brief creator's breath.

SHP-15 of Feb23

तमस्-आवृत इक अवस्था, अचित् में डूबी हुई

मृत्यु-धर्मा नींद ही उसका निजी विश्राम है !

शक्ति-सर्जन-अंश की इक क्षुद्र-सी शोभा यहां

प्रेरणा देती उसे इन क्षणिक मानव-कर्म में

अल्प-सृष्टा नष्ट होता, शेष रहती कृति यहां !

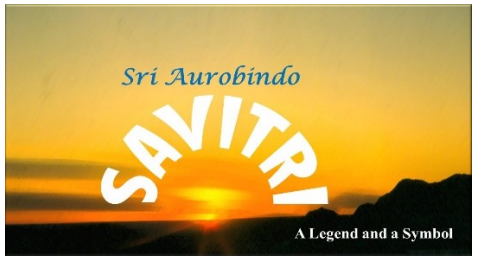

Savitri B02 C05 P163-164 (AD)

He dreams sometimes of the revels of the gods
And sees the Dionysian gesture pass,--
A leonine greatness that would tear his soul
If through his failing limbs and fainting heart
The sweet and joyful mighty madness swept:

Trivial amusements stimulate and waste
The energy given to him to grow and be.
His little hour is spent in little things.

SHP-15 of Feb23

देखता सपने कभी वह देव जैसे मोद का
देख पाता है झलक ही **'सोम'** की सुर-भंगिमा–
चीर देती आत्म उसका वह महत्ता सिंह-सी
यदि हृदय-गश और दुर्बल-अंग में किंचित कहीं–
बह निकलता शक्तिशाली हर्ष का उन्माद-मधु !

उद्दीप्त कर वह नष्ट करता तुच्छ-रंजन में यहां !!
ऊर्जा उसको मिली– बनने-बढ़ाने के लिये !!
बीत जाता जन्म-छोटा– वस्तु-छोटी-बात में !!

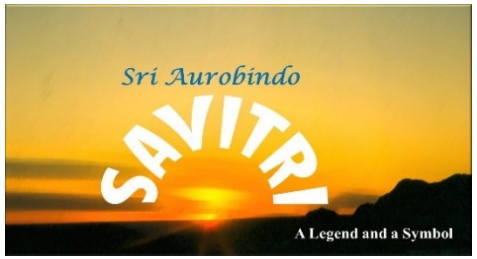

Savitri B02 C05 P169 (AD)

The world is other than we now think and see,

Our lives a deeper mystery than we have dreamed;

Our minds are starters in the race to God,

Our souls deputed selves of the Supreme.

SHP-16 of Feb23

हम देखते-जो-सोचते अति-भिन्न उससे है जगत् !

हर हमारे स्वप्न से भी भेद-जीवन— गूढ़तर !

दौड़ **'प्रभु'** की ओर में तो बुद्धि बस आरम्भ ही !

आत्मायें हैं हमारी नियत-दूती **'परम'** की !!

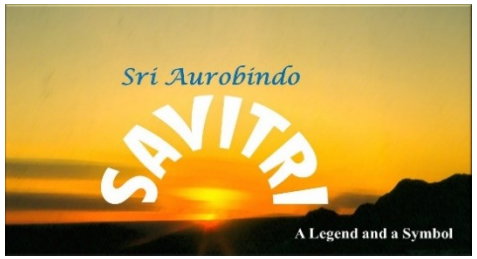

Savitri B02 C05 P170 (AD)

Even in our sceptic mind of ignorance
A foresight comes of some immense release,
Our will lifts towards it slow and shaping hands.
Each part in us desires its absolute.

Our thoughts covet the everlasting Light,
Our strength derives from an omnipotent Force,
And since from a veiled God-joy the worlds were made
And since eternal Beauty asks for form
Even here where all is made of being's dust,
Our hearts are captured by ensnaring shapes,
Our very senses blindly seek for bliss.

SHP-17 of Feb23

अज्ञ-मानव-बुद्धि तक में, जो कि संशय से भरी
भास आता— एक महती मुक्ति-भावी आ रही !
'ओर-उस' संकल्प खोले, मंद-सृष्टा मनुज-कर
चाहता हर अंश हम में— चरम अपनी पूर्णता !!

सोचना तो बस हमारा— लालसा **'चिर-ज्योति'** की !
जन्म लेता बल हमारा— **'सर्वशक्ता-ओज'** से !
और **'आवृत-ईश-सुख'** से चूंकि सिरजे जग-सकल,
चूंकि **'शोभा-दिव्य-शाश्वत'** मांगती आकार को,
तो यहां भी जो कि **'सत्'** की धूल-भर से ही बना,
बांध लेते रूप-मोहक— मूढ़-अंतर-मानवी !!
खोजती मनु-इन्द्रियां तो अंध-सी **'आनन्द'** को !!

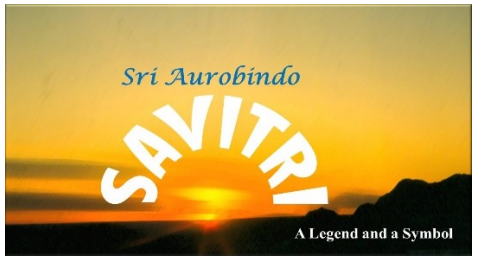

Savitri B02 C06 P197 (AD)

Our being must move eternally through Time;

Death helps us not, vain is the hope to cease;

A secret Will compels us to endure.

Our life's repose is in the Infinite;

It cannot end, its end is Life supreme.

SHP-18 of Feb23

आत्मा तो बस हमारी सतत बढ़ती **'काल'** में

आस-मिटने-की निरर्थक, मृत्यु ना करती मदद

गुप्त इक **'संकल्प'** से हम बाध्य सहने के लिये ।

विश्राम जीवन का हमारे है **'चिरन्तन-नित्य'** में

अंत हो सकता नहीं, बस अंत है— **'जीवन-परम'** ।

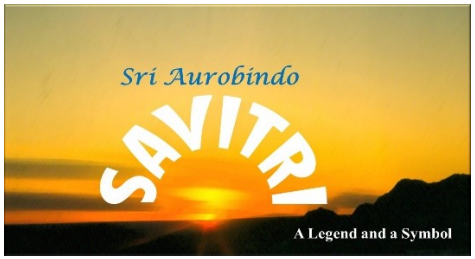

Savitri B02 C06 P197 (AD)

Death is a passage, not the goal of our walk:

Some ancient deep impulsion labours on:

Our souls are dragged as with a hidden leash,

Carried from birth to birth, from world to world,

Our acts prolong after the body's fall

The old perpetual journey without pause.

No silent peak is found where Time can rest.

SHP-18 of Feb23

मृत्यु केवल मार्ग भर ही; लक्ष्य, यात्रा का नहीं

संवेग कुछ भीतर गहन जो सतत है श्रम कर रहा

खींच-बढ़ती आत्मायें— गुप्त जैसे रज्जु से—

जन्म-दूजे-जन्म तक औ' लोक-दूजे-लोक तक!

देह गिर जाती मगर निज-कर्म की बढ़ती दिशा

वह सनातन-यात्रा, अविराम चलती है यहां !

'काल' के विश्राम का तो शान्त कोई ना शिखर ।।

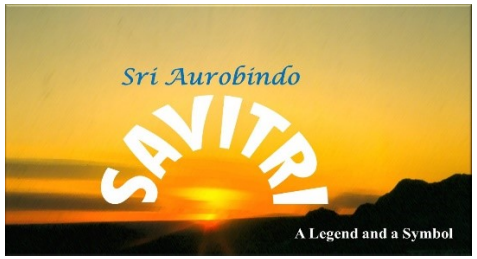

Savitri B02 C11 P275-276 (AD)

She made earth her home, for whom heaven was too small.

In a human breast her occult presence lived;
He carved from his own self his figure of her:
She shaped her body to a mind's embrace.

Into thought's narrow limits she has come;
Her greatness she has suffered to be pressed
Into the little cabin of the Idea,
The closed room of a lonely thinker's grasp:
She has lowered her heights to the stature of our souls
And dazzled our lids with her celestial gaze.

SHP-19 of Feb23

'वह' उतर आई धरा पर, स्वर्ग संसीमित जिसे !!

एक अंतर-मानवी में **'गुह्य-उपस्थिति'** आ बसी,
'उस-मूर्ति' को **'प्रभु'** ने गढ़ा, निज-आत्मा के रूप में,
बुद्धि जो पाये पकड़, निज-देह **'उसने'** यूं रची !

संकीर्ण-सीमा में स्वयं, आई विचारों में **'वही'** !
निज-महत्ता भींच कर, साकार-सीमा-कष्ट में !
उतरी विचारों से बने, इस क्षुद्र-सीमित-कक्ष में,
एकान्त-चिन्तक की समझ की बंद-छोटी-कोठरी—
निज-शिखर **'उसने'** झुकाये, मनुज-आत्मा-गर्त तक !!
चौंधती पलकें हमारी, दिव्य **'उसकी'** दृष्टि से !!

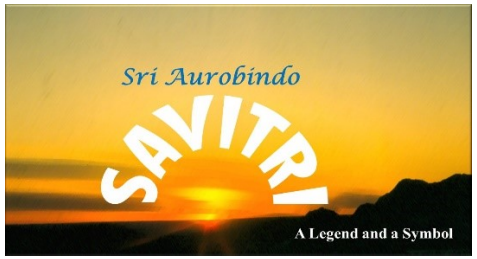

Savitri B02 C11 P275-276 (AD)

Thus each is satisfied with his high gain
And thinks himself beyond mortality blest,
A king of truth upon his separate throne.

To her possessor in the field of Time
A single splendour caught from her glory seems
The one true light, her beauty's glowing whole.

But thought nor word can seize eternal Truth:
The whole world lives in a lonely ray of her sun.

SHP-19 of Feb23

हर-एक यूं संतुष्ट बैठा, उच्च अपनी लब्धि से—
धन्य खुद को मानता वह मर्त्य-सीमा से परे!
आसीन आसन पर पृथक्, खुद सत्य-राजा-सा लगे !

दिक्काल के भीतर **'उसे'** जो प्राप्त कर पाता कहीं,
'उस' महत्ता से मिली, आभास दे तनि-भव्यता—
एक सच्ची ज्योति **'उसकी'** दीप्त-शोभा-पूर्णता !

किंतु **'शाश्वत-सत्य'** को ना-सोच ना-वाचा धरे!
'सूर्य-वह', एकल-किरण में जी रहा सारा जगत् !

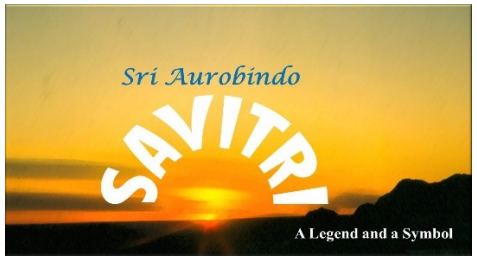

Savitri B02 C11 P275-276 (AD)

In our thinking's close and narrow lamp-lit house
The vanity of our shut mortal mind
Dreams that the chains of thought have made her ours;
But only we play with our own brilliant bonds;
Tying her down, it is ourselves we tie.

In our hypnosis by one luminous point
We see not what small figure of her we hold;
We feel not her inspiring boundlessness,
We share not her immortal liberty.

SHP-19 of Feb23

बुद्धि-दीपक से प्रकाशित, बंद-कुंचित-गेह में,
कुंद-कुंठित-बुद्धि का अभिमान-मिथ्या-मानवी,
मानता— बांधा **'उसे'**, मम-मनन-चिन्तन-श्रृंखला !
किंतु हम तो दीप्त अपने बंधनों से खेलते,
बांधना चाहें **'उसे'** पर असल खुद को बांधते !

बिंदु-भर की ज्योति से हम मुग्ध-सम्मोहित हुये !!
अल्प **'उसका'** अंश पाया, देख हम पाते नहीं !!
निस्सीम **'उसकी'** प्रेरणा, अनुभूत करते ही नहीं !
अमर **'उसकी'** मुक्ति को तो बांट तक पाते नहीं !

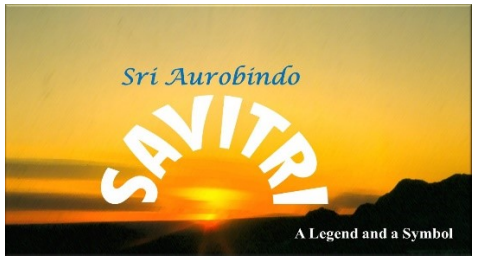

Savitri B02 C11 P275-276 (AD)

Thus is it even with the seer and sage;
For still the human limits the divine:
Out of our thoughts we must leap up to sight,
Breathe her divine illimitable air,
Her simple vast supremacy confess,
Dare to surrender to her absolute.

Then the Unmanifest reflects his form
In the still mind as in a living glass;
The timeless Ray descends into our hearts
And we are rapt into eternity.

SHP-19 of Feb23

औ' यहां तक संत-ऋषि के साथ भी घटता यही !!
क्योंकि तब भी मनुज करता **'दिव्य'** को सीमित यहां !!
मन-विचारों से परे हम कूद जायें दृष्टि में,
सांस लें हम दिव्यता की **'उस'** असीमित-वायु में,
मान लें **'उसकी'** सहज ही वृहत्-व्यापक-श्रेष्ठता !!
और साहस से **'उसे'** सम्पूर्ण-अर्पण कर सकें !!

'अव्यक्त' तब प्रतिबिम्ब करता, रूप-निज-आकार को,
जीवंत-सा दर्पण-यथा मन-बुद्धि निश्चल-शून्य में,
तब उतरती अंतरों में काल-हीना **'वह-किरण'**,
और तब हम डूब जाते **'परम-शाश्वत'** में गहन !

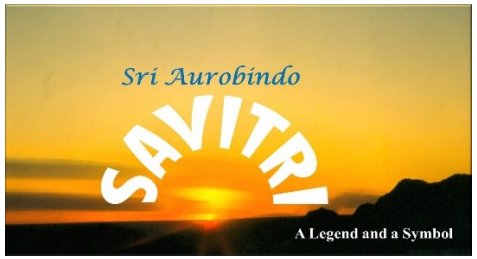

Savitri B02 C11 P275-276 (AD)

For Truth is wider, greater than her forms.

A thousand icons they have made of her

And find her in the idols they adore;

But she remains herself and infinite.

SHP-19 of Feb23

क्योंकि अपने रूप-सब से **'सत्य'** है विस्तृत-महत् !

सहस **'उसकी'** रूप-प्रतिमा वे बनाते हैं यहां !

और पाते हैं **'उसे'** हर इष्ट-प्रतिमा-पूज्य में !

किंतु **'वह'** तो **'तत्-स्वयं'** !! निस्सीम-व्यापक-नित्यता !!

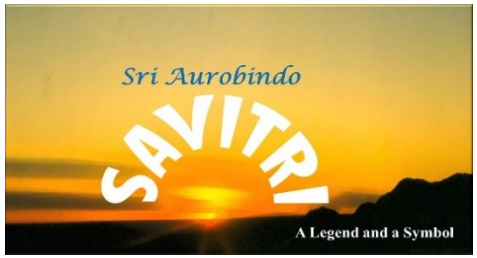

Savitri B02 C12 P280 (AD)

SHP-20 of Feb23

Far from our eager reach those summits live,

Too lofty for our mortal strength and height,

Hardly in a dire ecstasy of toil

Climbed by the spirit's naked athlete will.

दूर बसते वे शिखर, अति-दूर आतुर-पैठ से

अति-उच्च; मानव-क्षुद्र-कद से, तुच्छ-मानव-शक्ति से,

हर्ष के आवेश में अति-घोर-श्रम द्वारा कभी–

आत्मा की मल्ल-जैसी-ठान से चढ़ते कभी !

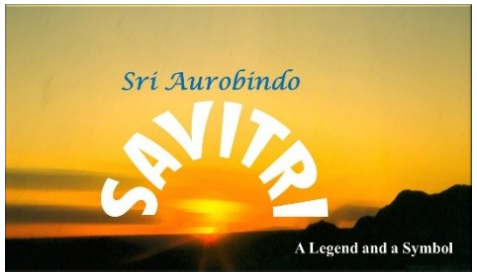

Savitri B02 C12 P280 (AD)

Austere, intolerant they claim from us

Efforts too lasting for our mortal nerve

Our hearts cannot cleave to nor our flesh support;

Only the Eternal's strength in us can dare

To attempt the immense adventure of that climb

And the sacrifice of all we cherish here.

SHP-20 of Feb23

सख्त-निष्ठुर वे शिखायें मांगतीं हमसे कठिन–

यत्न जो अविरल-निरन्तर, मर्त्य-सीमा से परे !

देह भी ना साध सकती, ना पकड़ते प्राण ही !!

कर सके बस **'शक्ति-शाश्वत'** मनुज-भीतर ये जतन–

उस महत्-अभियान के आरोह के दुष्कर-कदम !

और अर्पण कर सकें हम इष्ट-प्रेयस् सब यहां !!

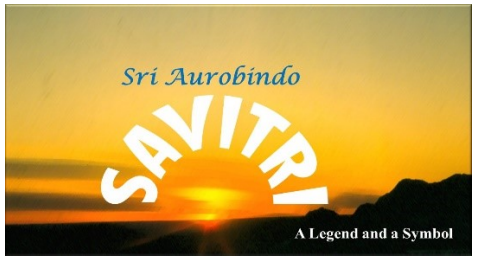

Savitri B02 C14 P290 (AD)

An incense floated in the quivering air,

A mystic happiness trembled in the breast

As if the invisible Beloved had come

Assuming the sudden loveliness of a face

And close glad hands could seize His fugitive feet

And the world change with the beauty of a smile.

SHP-21 of Feb23

एक खुशबू वायु में यूं कंप लहराती चली,

गहन-सुख की एक सिहरन पैठ अंतर में गई,

'अलख-प्रियतम-इष्ट' जैसे निकट-अतिशय आ गया

धर अकल्पित **'दिव्य-आनन'**, रूप-मोहक ले वहां;

आ गये हर्षित-करों में त्वरित **'उसके-श्रीचरण'** !!

औ' बदलता जगत्, शोभा **'मंदस्मित'** से यहां !!

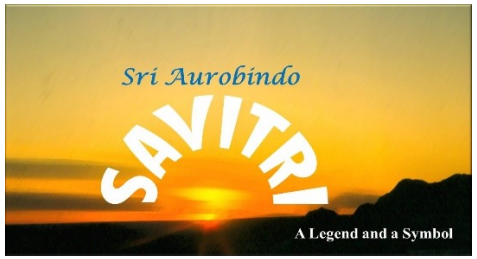

Savitri B03 C02 P312-312 (AD)

Even while he stood on being's naked edge
And all the passion and seeking of his soul
Faced their extinction in some featureless Vast,
The Presence he yearned for suddenly drew close.

Across the silence of the ultimate Calm,
Out of a marvellous Transcendence' core,
A body of wonder and translucency
As if a sweet mystic summary of her self
Escaping into the original Bliss
Had come enlarged out of eternity,
Someone came infinite and absolute.

SHP-22 of Feb23

जब खड़ा था परा-योगी, व्यक्ति-सत्ता-छोर पर
और उसकी आत्मा की खोज सब आवेग भी
बस मिटा ही चाहते थे एक व्यापक शून्य में,
तब अभीप्सित **'वह उपस्थिति'**, आ अचानक हो खड़ी !

'शांति-परमा' से बनी उस शून्यता के पार से,
जो निकलती उस **'परात्पर'** के विलक्षण-मर्म से,
पारभासी एक **'काया'** तेज-विस्मय-रूपिणी
सार मानो बन गई निज-आत्म-गुह्य का माधुरी
आदि उस **'आनन्द'** में जो थी पलायन कर रही
नित्य-शाश्वत से निकल **'वह'** वृहत्-व्यापक बन गई
'केवला' कोई **'अनन्ता'**, प्रकट सम्मुख हो गई !

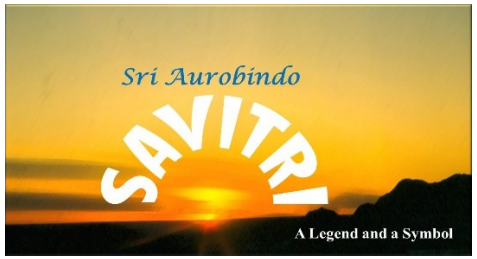

Savitri B03 C02 P312-312 (AD)

A being of wisdom, power and delight,

Even as a mother draws her child to her arms,

Took to her breast Nature and world and soul.

Abolishing the signless emptiness,

Breaking the vacancy and voiceless hush,

Piercing the limitless Unknowable,

Into the liberty of the motionless depths

A beautiful and felicitous lustre stole.

SHP-22 of Feb23

'देवि वह' आनन्द की औ' ज्ञान की भी शक्ति की,

घेर लेती बांह में निज-बाल को माता यथा–

जीव-जग-प्रकृति सकल– निज-वक्ष से चिपका लिया !!

मिटा करके शून्यता, संकेत ना जिसमें कहीं,

भंग करके रिक्तता औ' वाक्हीना-मूकता,

भेद कर **'अज्ञेय'** की भी चरम-सीमाहीनता,

उन अचल गहराइयों की मुक्तता-निर्बन्ध में–

चुपचाप सुंदर एक आई सुष्ठ-आभा-धन्यता !

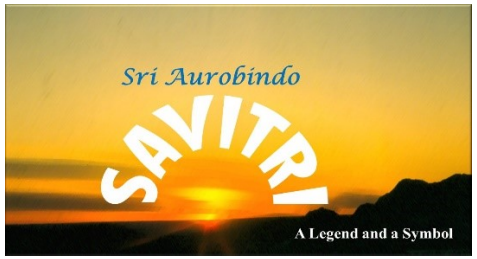

Savitri B03 C02 P312-312 (AD)

The Power, the Light, the Bliss no word can speak
Imaged itself in a surprising beam
And built a golden passage to his heart
Touching through him all longing sentient things.

A moment's sweetness of the All-Beautiful
Cancelled the vanity of the cosmic whirl.

A Nature throbbing with a Heart divine
Was felt in the unconscious universe;
It made the breath a happy mystery.

SHP-22 of Feb23

'शक्ति' एवं **'ज्योति'** औ' **'आनन्द'**– वाचा से परे
रूप-निज को एक अद्भुत किरण-पावन में बदल
मर्म-योगी तक रचा इक सेतु जैसे स्वर्ण का
सम्पूर्ण चेतन-द्रव्य का सम्पर्क उस-द्वारा किया !

'श्रीआभ-परमा' की क्षणिक बस एक पल की मधुरता !
मिटा पाई– घूमते ब्रह्मांड की निस्सारता !!

'ईश-हृत्' की दिव्य-धड़कन निहित प्रकृति-मध्य में
हो गई अनुभूत-वेदित इस अचेतन सृष्टि में
सांस को **'उसने'** बनाया गूढ़-आवृत-सुख यहां !

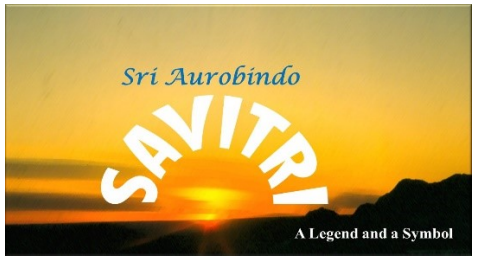

Savitri B03 C02 P312-312 (AD)

And brought a love sustaining pain with joy;
A love that bore the cross of pain with joy
Eudaemonised the sorrow of the world,
Made happy the weight of long unending Time,
The secret caught of God's felicity.

Affirming in life a hidden ecstasy
It held the spirit to its miraculous course;
Carrying immortal values to the hours
It justified the labour of the suns.

For one was there supreme behind the God.

SHP-22 of Feb23

औ' उतारा **'प्रेम'** को जो हर्ष से पीड़ा सहे,
'प्रेम' जो दु:ख-शूलि को भी हर्ष से करता वहन,
इस जगत की यातना को बदल डाला तोष में,
अंतवंचित-दीर्घ-**'युग'** का बोझ सुखदायी बना,
भेद गुह्तम मिल गया तब **'हर्ष-परमा-ईश'** का !

है छिपा **'आनन्द-घन'** इन जीवनों में, पुष्टि कर,
आत्मा को चमत्कारी मार्ग पर आरूढ़ रख,
बीतते क्षर-काल में ला मूल्य वे शाश्वत-अमर,
सार्थ **'उसने'** कर दिया– श्रम सूर्य-तारों का यहां !

क्योंकि **'प्रभु'** के साथ-पीछे एक **'परमा-शक्ति'** थी !!

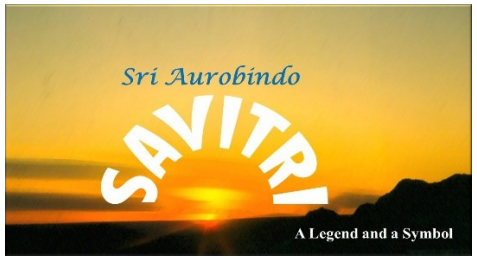

Savitri B03 C02 P312-312 (AD)

A Mother Might brooded upon the world;
A Consciousness revealed its marvellous front
Transcending all that is, denying none:
Imperishable above our fallen heads
He felt a rapturous and unstumbling Force.

The undying Truth appeared, the enduring Power
Of all that here is made and then destroyed,
The Mother of all godheads and all strengths
Who, mediatrix, binds earth to the Supreme.

SHP-22 of Feb23

सृष्टि पर आसीन बैठी– **'शक्ति-महती-अंबिका'**,
'चेतना' ने खोल डाली निज-विलक्षण-अग्रता
सकल सत्ता से परे, इनकार किसका भी नहीं–
पतित-मानव-शीश ऊपर बैठती **'अविनाशिनी'**
निर्बाध औ' आनन्दमय इक **'शक्ति'** का अनुभव किया !

'सत्य' वह प्रकटा अमर औ' **'शक्ति'** प्रकटी नित्य थी !
सब रचा-जाता-मिटाया, मूल-जिस-द्वारा यहां !
सकल-सुर की **'देवमाता'** !! बल-सकल की **'अंबिका'** !!
इस धरा को **'परम-प्रभु'** से जोड़ती जो **'माध्यता'** !!

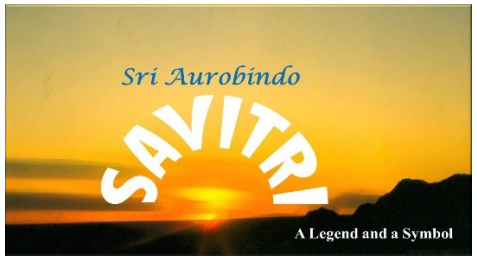

Savitri B03 C02 P314 (AD)

At the head she stands of birth and toil and fate,
In their slow round the cycles turn to her call;
Alone her hands can change Time's dragon base.

Hers is the mystery the Night conceals;
The spirit's alchemist energy is hers;
She is the golden bridge, the wonderful fire.

SHP-23 of Feb23

'वह' नियंता जन्म की है, कर्म की भी, भाग्य की
घूमते मंथर युगान्तर सिर्फ **'उसकी'** तान पर
बस बदल सकती **'वही'** त्रय-काल के गति-मूल को !

भेद **'उसका'** ही छिपाती घोर-श्यामा-यामिनी
आत्मा की कल्पकारी-ऊर्जा देती **'वही'**
सेतु जैसे स्वर्ण का **'वह'** है अलौकिक-अग्नि भी !

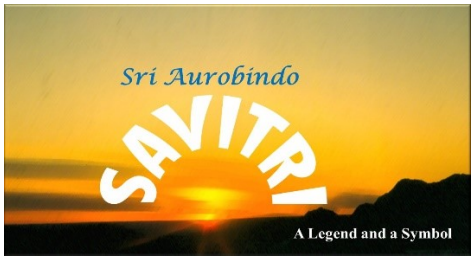

Savitri B03 C02 P314 (AD)

The luminous heart of the Unknown is she,

A power of silence in the depths of God;

She is the Force, the inevitable Word,

The magnet of our difficult ascent,

The Sun from which we kindle all our suns,

The Light that leans from the unrealised Vasts,

The joy that beckons from the impossible,

The Might of all that never yet came down.

SHP-23 of Feb23

उस परम-अज्ञेय का **'वह'** मर्म है आलोकमय

शान्त-नीरव-शक्ति है **'वह'**, निहित ईश्वर में गहन

शक्ति-आद्या **'वह'** अमोघा, आदि-ब्रह्म-निनाद भी

खींचती हमको **'वही'** आरोह-दुर्गम-पंथ पर

सृष्टि के हर सूर्य का **'वह'** मूल-सविता-कांतिमय

अव्यक्त-अगम-अथाह से जो **'ज्योति'** होती अवतरित

'आनन्द' जो हमको बुलाता अति-असंभव-छोर पर

'शक्ति-परमा' जो धरा पर आज तक उतरी नहीं !

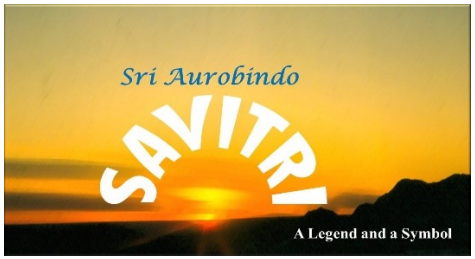

Savitri B03 C02 P314 (AD)

All Nature dumbly calls to her alone

To heal with her feet the aching throb of life

And break the seals on the dim soul of man

And kindle her fire in the closed heart of things.

SHP-23 of Feb23

बस **'उसी'** को टेरती है मूक हो सारी प्रकृति—

टीस पीड़ा की मिटे छूकर **'उसी'** के श्रीचरण !

तोड़ दे **'वह'** आत्मा के मुहरबंदी-आवरण !

जड़-अंधेरे-अंतरों में लौ **'उसी'** की जल उठे !!

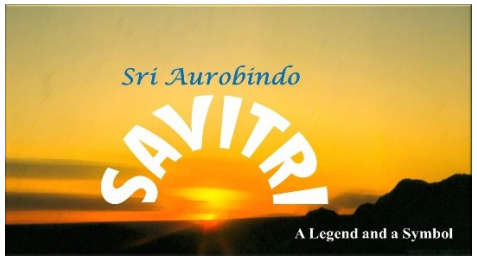

Savitri B03 C02 P315 (AD)

Once seen, his heart acknowledged only her.

Only a hunger of infinite bliss was left.

All aims in her were lost, then found in her;

His base was gathered to one pointing spire.

SHP-24 of Feb23

एकदर्शन से हृदय में एकनिष्ठा जग गई !

बस अनन्त आनन्द की ही भूख बाकी रह गई !

लक्ष्य **'उस'** में मिट गये सब, लक्ष्य **'वो'** ही बन गई !!

सर्पिल-शिखर के शीर्ष पर अब नींव केन्द्रित हो गई ।।

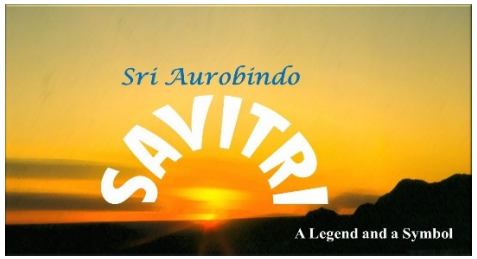

Savitri B03 C02 P315-316 (AD)

But vain are human power and human love

To break earth's seal of ignorance and death;

His nature's might seemed now an infant's grasp;

Heaven is too high for outstretched hands to seize.

This Light comes not by struggle or by thought;

In the mind's silence the Transcendent acts

And the hushed heart hears the unuttered Word.

A vast surrender was his only strength.

SHP-25 of Feb23

पर व्यर्थ हैं हम मानवों की शक्ति भी औ' प्रेम भी,

असमर्थ सम्मुख काल के अज्ञान के परिपाश के,

एक शिशु की पकड़ जैसी शक्ति केवल मानवी–

हाथ भी फैला न पहुंचे उच्च-परमा-लोक तक !!

न विचार से न प्रयास से यह **'ज्योति'** आती है परम,

बुद्धि की परिशून्यता में कार्य करता **'तत्-अगम'**,

अव्यक्त-अविरल-**'नाद'** को परिशान्त-अंतर ही सुने,

सम्पूर्ण अर्पण मात्र ही अवलम्ब मानव के लिये !!

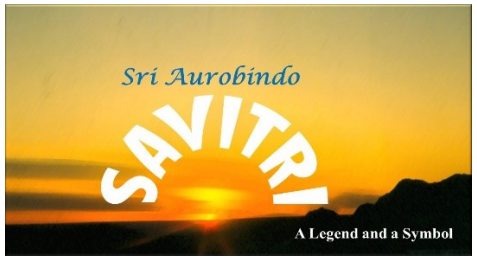

Savitri B03 C02 P315-316 (AD)

A Power that lives upon the heights must act,

Bring into life's closed room the Immortal's air

And fill the finite with the Infinite.

All that denies must be torn out and slain

And crushed the many longings for whose sake

We lose the One for whom our lives were made.

SHP-25 of Feb23

शीर्ष-शिखरों पर विराजित **'शक्ति'** ही आये स्वयं !

बंद-जीवन-कोठरी में नित्य लाये **'तत्-पवन'**–

सान्त-सीमित-मर्त्य को **'निस्सीम-शाश्वत'** से भरे !!

बाधा बने जो भी यहां वह नष्ट हो परिपूर्णत: !

सब कुचल दे कामनायें तनिक-सी जिनके लिये–

भूल जाते हम **'उसी'** को जन्म था जिसके लिये !!

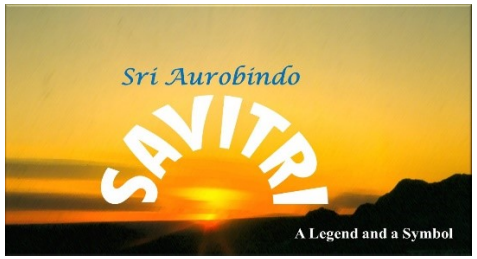

Savitri B03 C02 P315-316 (AD)

Now other claims had hushed in him their cry:

Only he longed to draw her presence and power

Into his heart and mind and breathing frame;

Only he yearned to call for ever down

Her healing touch of love and truth and joy

Into the darkness of the suffering world.

His soul was freed and given to her alone.

SHP-25 of Feb23

हर मांग का क्रन्दन-विलापन शान्त उसमें हो गया !

बस चाह थी साकार **'उसकी'** शक्ति का हो अवतरण–

इस हृदय में, बुद्धि में भी, सांस-लेती-देह में !!

थी अभीप्सा बस पुकारे सतत ही नीचे **'उसे'**,

सत्य को, आनन्द को, उस प्राणदायी-प्रेम को–

तामसी-संताप-पूरित त्रास-पाते-जगत् में !!

यह आत्मा तो मुक्त होकर बस **'उसी'** की हो गई !!

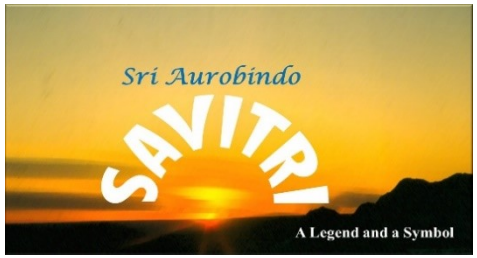

Savitri B03 C03 P333 (AD)

It sent its voiceless prayer to the Unknown;

It listened for the footsteps of its hopes

Returning through the void immensities,

It waited for the fiat of the Word

That comes through the still self from the Supreme.

SHP-26 of Feb23

'अज्ञेय-प्रभु' की ओर उसने मूक भेजी प्रार्थना !

संधान से सुनता रहा, पदचाप अपनी आस की !

लौटती परिशून्य के निस्सीम-व्यापी पार से,

बस प्रतीक्षा **'शब्द'** के आदेश-अनुमत-दान की !!

जो कृपा **'जगदीश'** देते आत्म-नीरव-मार्ग से ।।

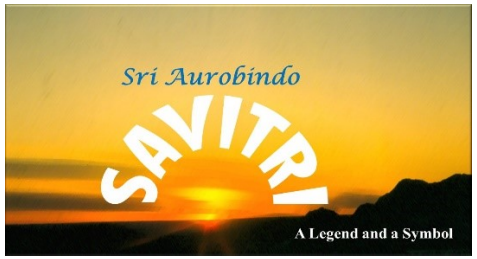

Savitri B03 C04 P345 (AD)

O Truth defended in thy secret sun,

Voice of her mighty musings in shut heavens

On things withdrawn within her luminous depths,

O Wisdom-Splendour, Mother of the universe,

Creatrix, the Eternal's artist Bride,

Linger not long with thy transmuting hand

Pressed vainly on one golden bar of Time,

As if Time dare not open its heart to God.

SHP-27 of Feb23

'सत्य-परमे'! जो विराजित गुह्य अपने सूर्य में !

बंद-लोकों में छिपी जो **'वाक्'**, चिन्तन-शक्ति की !

'दीप्त-अपने-अंतरों' में जो समेटे द्रव्य को !

'परमप्रज्ञा-शोभिते' ! हे **'जगत्जननी-अंबिके'** !

हे **'विधात्री'** ! कलाधीशा, **'नित्य-शाश्वत'** की **'वधू'** !

देर अब तो ना लगा **'तू'** वरद अपने हस्त से !

'काल', स्वर्णिम-अर्गला पर, जो टिका है व्यर्थ ही,

'काल' निज-हृत्, ओर-**'प्रभु'**-ज्यों खोलता-साहस नहीं !

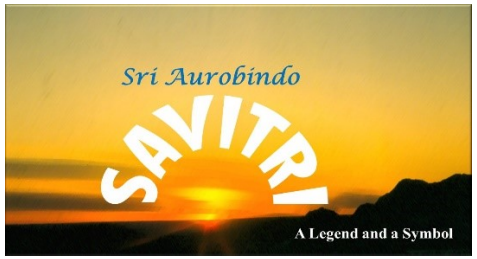

Savitri B03 C04 P345 (AD)

O radiant fountain of the world's delight

World-free and unattainable above,

O Bliss who ever dwellst deep-hid within

While men seek thee outside and never find,

Mystery and Muse with hieratic tongue,

Incarnate the white passion of thy force,

Mission to earth some living form of thee.

SHP-27 of Feb23

सृष्टि के आनन्द की ओ **'दीप्त-उद्गम-निर्झरी'** !

मुक्त **'तू'** संसार से भी औ' **'परात्पर-से-परे'** !

सतत बसती **'परम-सुखदे'** ! गहन-अंतर में छिपी !

खोज-बाहर जग **'तुझे'** पर ढूंढ पाता ना कभी !

ओ **'रहस्ये'** ! हर कला की **'मूल-दैवी-प्रेरणा'** !

धवल अपने **'प्रेम के आवेग'** से हो अवतरित !

जीवन्त अपने रूप को **'तू'** इस धरा पर भेज दे !

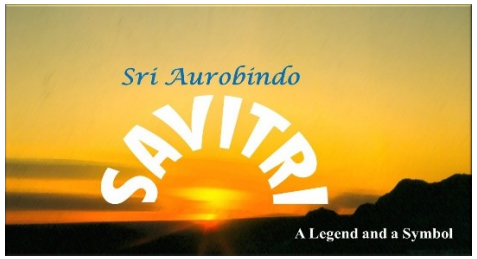

Savitri B03 C04 P345 (AD)

One moment fill with thy eternity,

Let thy infinity in one body live,

All-Knowledge wrap one mind in seas of light,

All-Love throb single in one human heart.

Immortal, treading the earth with mortal feet

All heaven's beauty crowd in earthly limbs!

SHP-27 of Feb23

पूर्ण भर दे काल-क्षण को **'निज-अमरता-नित्य'** से !!

एक तन में आ बसे **'निस्सीम-तेरी-चेतना'** !!

डूब जाये एक मानस **'ज्ञान-ज्योतित-सिंधु'** में !!

धड़क पाये **'प्रेम-तत्'** से एक अंतर मानवी !!

'अमर-दिव्ये' ! मर्त्य-पद से विचर धरती पर यथा—

रूप स्वर्गों का सकल भर मानवी-प्रत्यंग में !

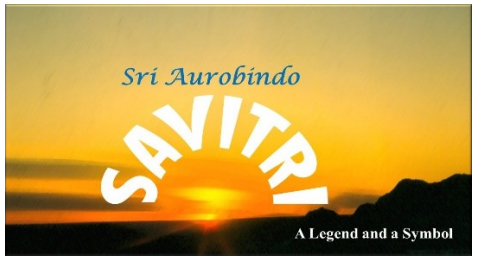

Savitri B03 C04 P345 (AD)

Omnipotence, girdle with the power of God

Movements and moments of a mortal will,

Pack with the eternal might one human hour

And with one gesture change all future time.

Let a great word be spoken from the heights

And one great act unlock the doors of Fate.

SHP-27 of Feb23

'शक्ति-परमे' ! घेर दो यूं **'ईश-बल'** की मेखला—

इक मनुज-संकल्प के हर कार्य में ! हर काल में !

एक मानव-काल में भर **'शक्ति-शाश्वत'** इस तरह—

एक इंगित से बदल दो सकल-भावी-काल को !!

'दिव्य-एकल-शब्द' का उच्चार शिखरों से करो !

औ' **'नियति'** के द्वार खोलो **'महत्-एकल-कर्म'** से !!

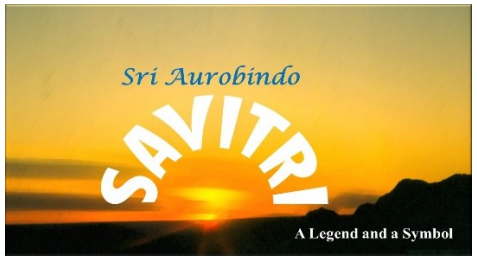

Savitri B04 C02 P364 (AD)

Her will was puissant on their nature's acts,

Her heart's inexhaustible sweetness lured their hearts,

A being they loved whose bounds exceeded theirs;

Her measure they could not reach but bore Her touch,

Answering with the flower's answer to the sun

They gave themselves to Her and asked no more.

SHP-28 of Feb23

बांधता संकल्प **'उस'** का सहज-मानव-कर्म को,

खींचता माधुर्य-अक्षय **'उस'** हृदय में मर्त्य को,

प्रेम वे करते **'उसे'** जो मनुज-सीमा से परे !

छू न पाते **'वह-शिखर'** पर **'वह-कृपा'** पाते रहे,

यूं **'उसे'** करते निवेदन, पुष्प जैसे सूर्य को—

सौंप देते सब **'उसी'** को, मांगते कुछ भी नहीं !!

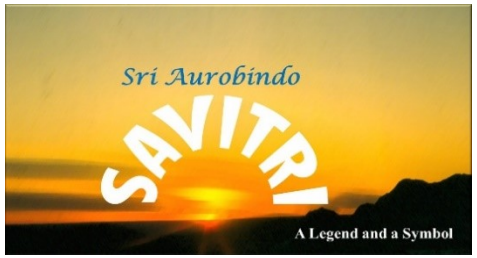

Savitri B04 C03 P370-371 (AD)

O Force-compelled, Fate-driven earth-born race,
O petty adventurers in an infinite world
And prisoners of a dwarf humanity,
How long will you tread the circling tracks of mind
Around your little self and petty things?

But not for a changeless littleness were you meant,
Not for vain repetition were you built;
Out of the Immortal's substance you were made;
Your actions can be swift revealing steps,
Your life a changeful mould for growing gods.

SHP-29 of Feb23

'शक्ति-बेबस', **'दैव-चालित'**, जाति जन्मी भूमि पर,
जो करे संकीर्ण-साहस इस अनन्ता-सृष्टि में,
और बंदी जो बनी मनुवंश-वामन के यहां,
काटते कबतक रहोगे गोल-चक्कर बुद्धि के ?
तुच्छ-द्रव्यों, क्षुद्र-सत्ता की धुरी को फेरते ?

क्योंकि जन्मे तुम नहीं इक क्षुद्र-जड़ता के लिये !
ना बने हो तुम यहां पर व्यर्थ-आवृति के लिये !
उस **'अमर'** के तत्व से ही तुम गढ़े-निर्मित हुये !
बन सकें सब कर्म तेरे, तीव्र-पग अभिव्यक्ति के !
नित्य-नूतन जन्म-सांचा, सतत-वर्धित-देव का !

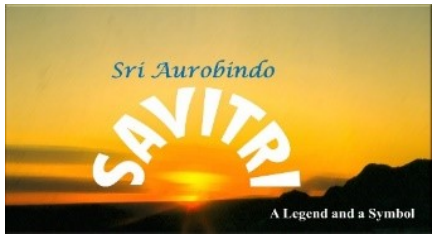

Savitri B04 C03 P370-371 (AD)

A Seer, a strong Creator, is within,

The immaculate Grandeur broods upon your days,

Almighty powers are shut in Nature's cells.

A greater destiny waits you in your front:

This transient earthly being if he wills

Can fit his acts to a transcendent scheme.

SHP-29 of Feb23

'दिव्य-दृष्टा', **'सबल-सृष्टा'**, है छिपा अन्तर-निहित !

ध्यान करती तव-दिनों पर **'शुद्ध-महिमाश्री-विमल'** !

और **'प्रकृति'**-कोशिका में बंद परमा-शक्तियां !

तव प्रतीक्षा में खड़ी इक नियति-महती सामने !

यह धरा का क्षणिक प्राणी यदि यहां पर ठान ले—

जोड़ सकता कर्म अपने, **'ईश-तत्'** आलेख से !

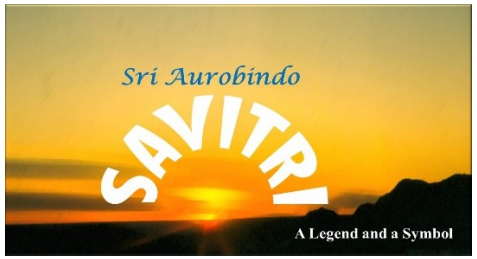

Savitri B04 C03 P370-371 (AD)

He who now stares at the world with ignorant eyes
Hardly from the Inconscient's night aroused,
That look at images and not at Truth,
Can fill those orbs with an immortal's sight.

Yet shall the godhead grow within your hearts,
You shall awake into the spirit's air
And feel the breaking walls of mortal mind
And hear the message which left life's heart dumb
And look through Nature with sun-gazing lids
And blow your conch-shells at the Eternal's gate.

SHP-29 of Feb23

घूरता है जो जगत् को अज्ञ-नयनों से अभी,
जाग पाया जो तनिक ही **'अचित्'** रजनी से अभी,
देखता जो रूप-छाया, **'सत्य'** को देखे नहीं,
कोटरों में नेत्र के वह **'दृष्टि-शाश्वत'** भर सके !

किंतु तब भी उर-तुम्हारे **'देव'** बढ़ता जायेगा !
जाग कर तुम सांस लोगे आत्मा की वायु में !
अनुभूत होगी गिर रही दीवार नश्वर-बुद्धि की !
अवाक् प्राणों को करे, संदेश सुन लोगे वही !
देख **'प्रकृति'** को सकोगे, सूर्य-जैसी दृष्टि से !
नाद शंखों का करोगे **'नित्य-शाश्वत'** द्वार पर !

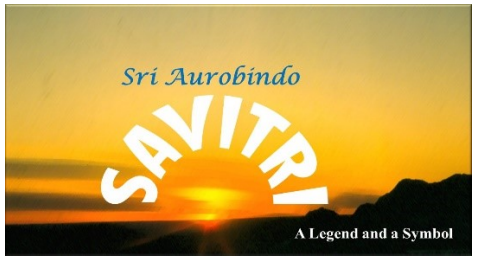

Savitri B04 C03 P370-371 (AD)

Authors of earth's high change, to you it is given
To cross the dangerous spaces of the soul
And touch the mighty Mother stark awake
And meet the Omnipotent in this house of flesh
And make of life the million-bodied One.

The earth you tread is a border screened from heaven;
The life you lead conceals the light you are.

SHP-29 of Feb23

उच्चवर्तन-भूमि-लेखक, कार्य तुमको है मिला—
पार कर लो आत्मा के कठिन-अतिदुष्कर-गगन !
और छू लो पूर्ण जाग्रत **'शक्ति-माता'** के चरण !!
'सर्वशक्ता' को उतारो मांस के इस हाड़ में !!
और जीवन को बना दो— **'एक-तत्'**, लख-देह में !!

स्वर्ग-सीमा ढंक रही, जिस भूमि पर तू चल रहा,
ज्योति जो तू, वह ढंकी, जिस भांति तू जीता यहां !

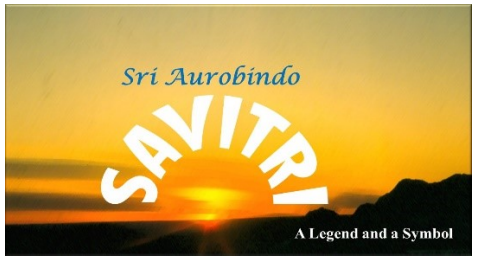

Savitri B04 C03 P370-371 (AD)

Immortal Powers sweep flaming past your doors;

Far-off upon your tops the god-chant sounds

While to exceed yourselves thought's trumpets call,

Heard by a few, but fewer dare aspire,

The nympholepts of the ecstasy and the blaze.

SHP-29 of Feb23

द्वार तेरे निकल जातीं— **'अमर-जगमग-शक्तियां'** !

दूर तेरी चोटियों पर— देव-वंदन गूंजता !

बज रही संकल्प-भेरी— पार जाओ अहं के !

सुन सकें कुछ ही, मगर अति-अल्प ही साहस करें—

तीव्र ज्वाला से भरे जो हर्ष के उन्माद से !!

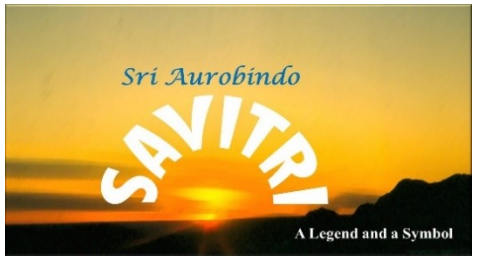

Savitri B04 C03 P375 (AD)

As when the mantra sinks in Yoga's ear,
Its message enters stirring the blind brain
And keeps in the dim ignorant cells its sound;
The hearer understands a form of words
And, musing on the index thought it holds,
He strives to read it with the labouring mind,
But finds bright hints, not the embodied truth:
Then, falling silent in himself to know
He meets the deeper listening of his soul:

SHP-30 of Feb23

डूबता है मंत्र जैसे **'योग-दीक्षा'**-कर्ण में,
झकझोरता संदेश आकर बुद्धि-अंधी को यथा
अज्ञ-मंदित-कोशिका में नाद उसका गूंजता;
मंत्र-श्रोता तो समझता शब्द के आकार को
और इंगित-धारणा पर गहन करता है मनन
यत्न करता बुद्धि-श्रम से वह पठन का, पाठ का
दीप्त बस संकेत पाता, सत्य-अंत: को नहीं !
तब उतरता जानने को आत्म-नीरव-भाव में
और सुनता है गहनतर, आत्मा में, अर्थ को—

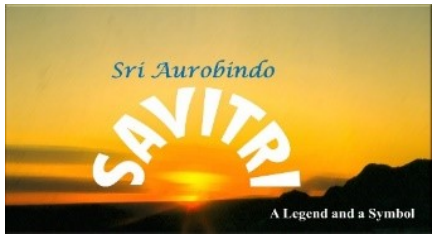

Savitri B04 C03 P375 (AD)

The Word repeats itself in rhythmic strains:
Thought, vision, feeling, sense, the body's self
Are seized unalterably and he endures
An ecstasy and an immortal change;
He feels a Wideness and becomes a Power,
All knowledge rushes on him like a sea:
Transmuted by the white spiritual ray
He walks in naked heavens of joy and calm,
Sees the God-face and hears transcendent speech:
An equal greatness in her life was sown.

SHP-30 of Feb23

गूंजता है **'शब्द'** खुद ही, पुन: लय में, छन्द में !!
सोच, दर्शन, भाव, बोधन, चेतना तक देह की !!
पकड़ जाते सर्वदा को और वह पाता सघन—
हर्ष के आवेग को औ' अमर-वर्तन-नित्य को !
अनुभूत करता है **'वृहत्'** औ' **'शक्ति'** बनता वह स्वयं
आ उमड़ती तब उसी में सकल-विद्या सिंधु-सी
रूप उसका नव बनाती धवल-आत्मिक-शुभकिरण
वह विचरता लोक-प्रस्फुट— शांति में, आनन्द में
देखता है **'ईश-मुख'** को और सुनता **'वाक्-तत्'**
रोप, सावित्री-जनम में, वह महत्ता दी गई ।।

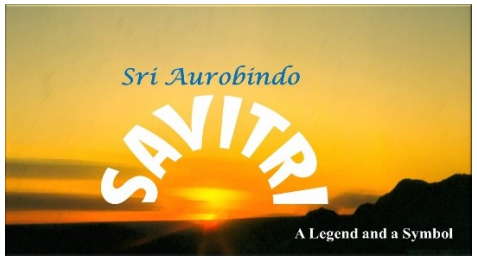

Savitri B05 C03 P406 (AD)

In one great hour of the unveiling gods

Even a brief nearness has reshaped my life.

For now I know that all I lived and was

Moved towards this moment of my heart's rebirth;

I look back on the meaning of myself,

A soul made ready on earth's soil for Thee.

SHP-31 of Feb23

दैव-करुणा से अनावृत, आ गई महती-घड़ी,

कुछ पलों की ही निकटता, ढाल जीवन को गई ।

क्योंकि अब मैं जानता, मैं जो बना, जो भी जिया—

ले चला, हृत्-जन्म-अभिनव के मुहूरत ओर ही !

जब झांक-पीछे देखता निज-विगत-जीवन-अर्थ को—

माटी-धरा तैयार करती— आत्मा **'तेरे लिये'** !!

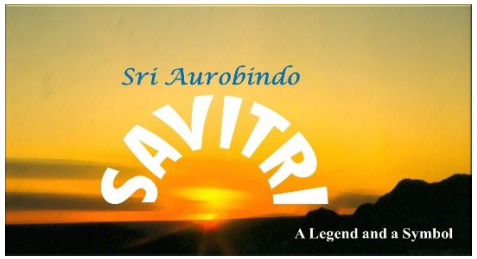

Savitri B05 C03 P407-408 (AD)

I looked upon the world and missed the Self,
And when I found the Self, I lost the world,
My other selves I lost and the body of God,
The link of the finite with the Infinite,
The bridge between the appearance and the Truth,
The mystic aim for which the world was made,
The human sense of Immortality.

But now the gold link comes to me with thy feet
And His gold sun has shone on me from thy face.

SHP-32 of Feb23

जब देखता हूं जगत् को, वह **'परम'** ओझल हो गया !!
औ' **'परम'** को देखता, तो जगत् मेरा खो गया !!
खो गई काया **'परम'** की, अन्य-सत्ता-मम सभी,
'निस्सीम' से इस-सान्त का सम्पर्क खंडित हो गया;
सेतु टूटा **'सत्य'** का इस जगत्भासी-दृश्य से,
'लक्ष्य-गुह्य' जो सृष्टि का, वह मूल-कारण खो गया,
'अमर-शाश्वत' बोध तजकर मनुज मोहित हो गया।

किंतु अब मैं स्वर्ण-साधन पा गया— **'तेरे-चरण'** !!
और जगमग **'मुख-तुम्हारा'**— स्वर्ण-सविता **'तत्-परम'** !!

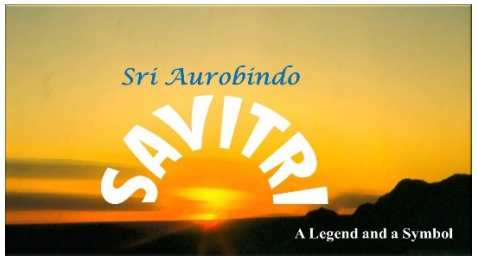

Savitri B05 C03 P408 (AD)

For here are secret spaces made for thee

Whose caves of emerald long to screen thy form.

Wilt thou not make this mortal bliss thy sphere?

Descend, O happiness, with thy moon-gold feet

Enrich earth's floors upon whose sleep we lie.

SHP-33 of Feb23

गुप्त अंचल हैं यहां जो बस बने **'तेरे लिये'** !

कंदरायें वे हरित, आकार **'तेरा'** चाहतीं !

क्या न **'तू'** अपनायेगी, मर्त्य-सुख के लोक को ?

अब उतारो निज-चरण शशि-स्वर्ण-से, **'सुखदायिनी'** !

सुप्त-भू-तल पर बसे हम, धन्य कर दो यह धरा !!

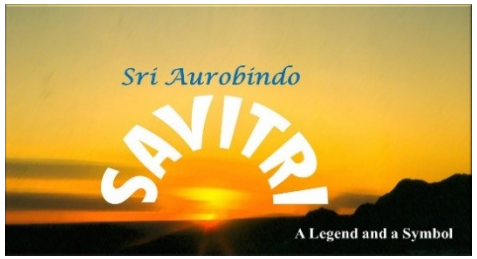

Savitri B06 C02 P442-443 (AD)

Was then the sun a dream because there is night?

Hidden in the mortal's heart the Eternal lives:

He lives secret in the chamber of thy soul,

A Light shines there nor pain nor grief can cross.

A darkness stands between thyself and him,

Thou canst not hear or feel the marvellous Guest,

Thou canst not see the beatific sun.

SHP-34 of Feb23

चूंकि फैली है निशा तो **'सूर्य'** क्या इक स्वप्न था **?**

बस रहा है **'अमर-शाश्वत'**, मर्त्य के उर में छिपा

गुप्त रहता **'वह'** तुम्हारी आत्मा के कक्ष में

छू सके ना-शोक ना-दु:ख, **'ज्योति'** जलती है वहां।

बीच में **'उसके'**-तुम्हारे, एक अंधा-पट पड़ा

'अतिथि-अद्भुत' को न जाने, सुन सके ना तू कभी

वरद-सुखमय **'सूर्य'** को तू देख पाती ही नहीं।

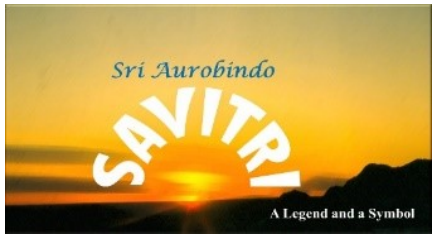

Savitri B06 C02 P442-443 (AD)

O queen, thy thought is a light of the Ignorance,
Its brilliant curtain hides from thee God's face.

It illumes a world born from the Inconscience,
But hides the Immortal's meaning in the world.

Thy mind's light hides from thee the Eternal's thought,
Thy heart's hopes hide from thee the Eternal's will,
Earth's joys shut from thee the Immortal's bliss.

SHP-34 of Feb23

धारणा रानी तुम्हारी– ज्योति है अज्ञान की !
'ईश-मुख' तुझसे छिपाता– पट-दमकता-सोचता !

यह प्रकाशित कर रहा बस **'अचित्-जन्मे'** जगत् को !
किंतु इस संसार में यह **'अर्थ-शाश्वत'** ढंक रहा !

'धारणा-शाश्वत' छिपाती– ज्योति तेरी बुद्धि की !
आस-उर-तव ढांक लेती, **'अमर-तत्-संकल्प'** को !
मोद भू का रोक देता, **'अमर-तत्-आनन्द'** को !!

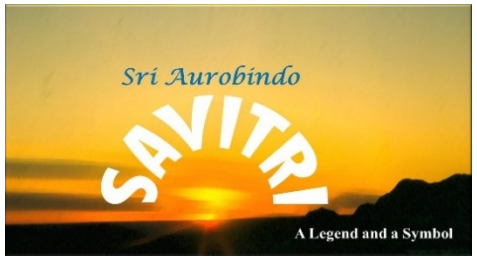

Savitri B06 C02 P443 (AD)

By pain and joy, the bright and tenebrous twins,
The inanimate world perceived its sentient soul,
Else had the Inconscient never suffered change.

Pain is the hammer of the Gods to break
A dead resistance in the mortal's heart,
His slow inertia as of living stone.

If the heart were not forced to want and weep,
His soul would have lain down content, at ease,
And never thought to exceed the human start
And never learned to climb towards the Sun.

SHP-35 of Feb23

अंधमय औ' दीप्तिमय, दु:ख और सुख के युग्म से–
देखी अचेतन सृष्टि ने चैतन्य अपनी आत्मा;
अन्यथा तो **'अचित्-जड़ता'** बदल पाती ना कभी !

कष्ट है **'दैवी'** हथौड़ा जो यहां पर तोड़ता–
मनुज-उर में जमे-बैठे सघन-जड़-प्रतिरोध को !!
तमस् उसका मंद-सा जस जी-रहे-पाषाण में !!

चाह को औ' रुदन को यदि बाध्य होता ना हृदय–
तुष्ट होकर गर्त में वह आत्मा रहती पड़ी !
आरम्भ-मानव के परे वह सोच पाता ना कभी !
औ' कभी ना सीखता आरोह **'सविता'** ओर को !!

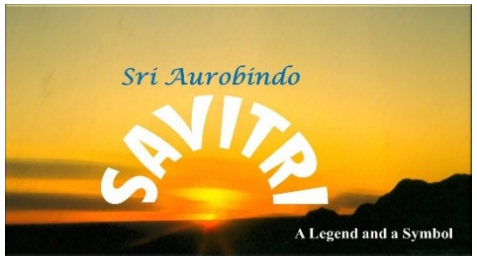

Savitri B06 C02 P448 (AD)

Yes, there are happy ways near to God's sun;

But few are they who tread the sunlit path;

Only the pure in soul can walk in light.

An exit is shown, a road of hard escape

From the sorrow and the darkness and the chain;

But how shall a few escaped release the world?

The human mass lingers beneath the yoke.

SHP-36 of Feb23

हां, बने हैं मार्ग सुखमय, निकट **'प्रभु के सूर्य'** के !!

किंतु चलते अल्पजन ही, **'रवि-प्रकाशित-मार्ग'** पर !!

चल सकें बस शुद्ध-आत्मा, **'दीप्त-रवि'** के पंथ पर ।

है निकासी अन्य भी इक— पथ-पलायन का कठिन !

छूटने का बंधनों से औ' तमस् से, कष्ट से !

किंतु कैसे जग बचेगा ? कुछ जनों की मुक्ति से ?

शेष मानव-जाति तो उस भार-कोल्हू में दबी !

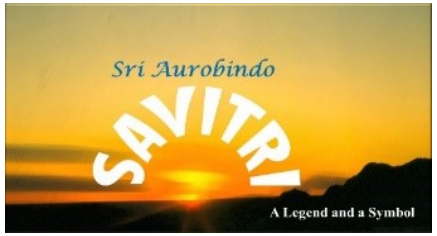

Savitri B06 C02 P448 (AD)

Escape, however high, redeems not life,

Life that is left behind on a fallen earth.

Escape cannot uplift the abandoned race

Or bring to it victory and the reign of God.

A greater power must come, a larger light.

SHP-36 of Feb23

उच्च कितना भी पलायन, रक्ष-जीवन ना करे,

छूट पीछे त्यक्त-जीवन, पतित-भू पर जो बचा ।

ना उठा सकता पलायन, त्यक्त मानव-जाति को !

ला सके ना राज्य **'प्रभु'** का और पाता ना विजय !

इक महत्तर **'शक्ति'** आये !! औ' वृहत्तर **'ज्योति'** भी !!

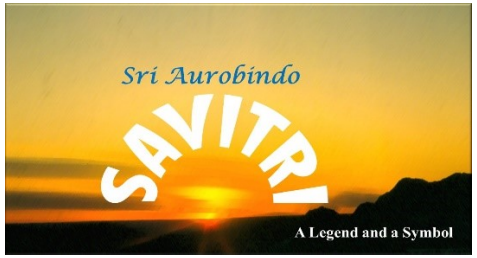

Savitri B06 C02 P457 (AD)

The will of the Timeless working out in time
In the free absolute steps of cosmic Truth
Appears a hard machine or meaningless Fate.

A Magician's formulas have made Matter's laws
And while they last, all things by them are bound;
But the spirit's consent is needed for each act
And Freedom walks in the same pace with Law.

All here can change if the Magician choose.

SHP-37 of Feb23

त्रयकाल में होता घटित संकल्प **'कालातीत'** का
सृष्टि-व्यापी **'सत्य'** के उन्मुक्त कदमों में यहां
भासता है यंत्र-निर्मम या निरर्थक-भाग्य-सा !

जड़-विधानों को रचा है एक **'मायाधीश'** ने !!
और जब लागू नियम तो सृष्टि बंधन में बंधी !!
किंतु सम्मति उस **'परम'** की चाहिये हर कार्य में—
बंधनों के साथ चलते **'दिव्य-निर्बाधित-कदम'** !

सब बदल सकता यहां 'गर चाह **'जादूगर'** करे !!

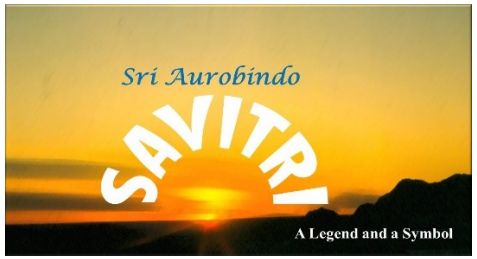

Savitri B06 C02 P459-460 (AD)

This world was not built with random bricks of Chance,

A blind god is not destiny's architect;

A conscious power has drawn the plan of life,

There is a meaning in each curve and line.

SHP-38 of Feb23

संयोगजाया-ईंट से तो यह जगत् बनता नहीं !

एक अंधा-देवता तो नियति-निर्माता नहीं !

रूपरेखा जीवनों की, **'शक्ति-चिद्'** ने खुद रची !

अर्थ है गहरा छिपा– हर लीक में, हर मोड़ में !!

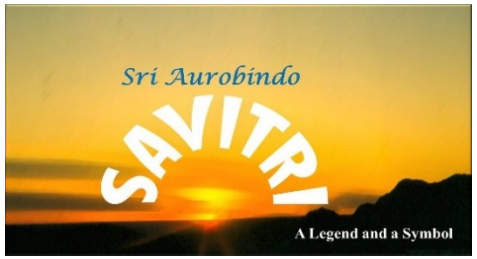

Savitri B07 C02 P476 (AD)

The Voice replied: "Remember why thou cam'st:
Find out thy soul, recover thy hid self,
In silence seek God's meaning in thy depths,
Then mortal nature change to the divine.

Open God's door, enter into his trance.
Cast Thought from thee, that nimble ape of Light:
In his tremendous hush stilling thy brain
His vast Truth wake within and know and see.

SHP-39 of Feb23

'वाक्' बोली— "याद कर तू किसलिये आई यहां ?
खोज ले निज-आत्मा को, गुप्त-निजता प्राप्त कर !!
निज-गहनता-शून्य में तू अर्थ **'प्रभु'** का जान ले,
तब बदल दे मर्त्य-प्रकृति, **'दिव्यता'** में पूर्णत: ।

द्वार **'प्रभु'** के खोल दे औ' पैठ जा **'तत्-भाव'** में !
फेंक दे वह **'सोचना'** जो द्रुत-नकलची **'ज्योति'** का !!
शान्त कर मस्तिष्क को **'उस'** घोर-नीरव-शून्य में
'सत्य-विस्तृत' को जगा तू देख उर में, जान ले !

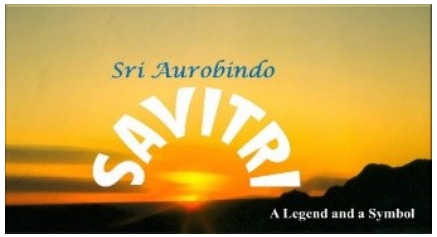

Savitri B07 C02 P476 (AD)

Cast from thee sense that veils thy spirit's sight:
In the enormous emptiness of thy mind
Thou shalt see the Eternal's body in the world,
Know him in every voice heard by thy soul:
In the world's contacts meet his single touch;
All things shall fold thee into his embrace.

Conquer thy heart's throbs, let thy heart beat in God:
Thy nature shall be the engine of his works,
Thy voice shall house the mightiness of his Word:
Then shalt thou harbour my force and conquer Death."

SHP-39 of Feb23

बोध विषयों का मिटा जो दृष्टि-आत्मा को ढंके !
और तब निज-बुद्धि के उस शून्यता-विस्तार में
देख लेगी तू जगत् में **'देह-शाश्वत'** को यहां !
आत्म-श्रुत हर शब्द में पहचान लेगी तू **'उसे'** !
सम्पर्क-जग में पाएगी तू एक **'तत्-स्पर्श'** ही !
बांध देगी **'पाश-प्रभु'** में वस्तु जग की हर तुझे !!

जीत निज-उर धड़कनों को, हर धड़क हो **'ईश'** में !
बन जाएगी प्रकृति तुम्हारी, यंत्र **'प्रभु'** के कार्य का !
आ बसेगी वाक्-तव में, शक्ति **'उसके शब्द'** की !!
'शक्ति-मम' तब धारकर तू जीत लेगी **'मृत्यु'** को" !!!

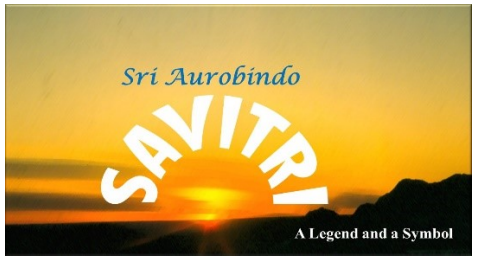

Savitri B07 C02 P486-487 (AD)

But for such vast spiritual change to be,

Out of the mystic cavern in man's heart

The heavenly Psyche must put off her veil

And step into common nature's crowded rooms

And stand uncovered in that nature's front

And rule its thoughts and fill the body and life.

SHP-40 of Feb23

किन्तु इतने वृहत् आत्मिक महा-वर्तन के लिये

निकल बाहर मनु-हृदय की कंदरा-गुह्य-घोर से

आवरण अपना हटाये **'दिव्य-सत्ता-चैत्य'** की !

पैठ जाये— भीड़-घन सामान्य-प्रकृति-कक्ष में !

हो खड़ा बिन-आवरण वह मनुज-प्रकृति सामने !

और शासन भी करे— भर बुद्धि-काया-प्राण को !!

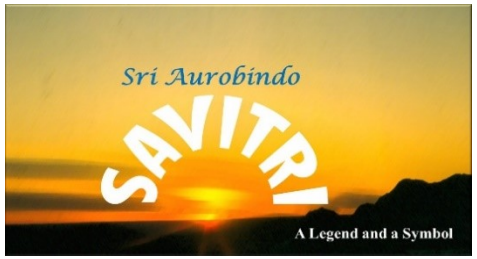

Savitri B07 C04 P503-505 (AD)

Here from a low and prone and listless ground

The passion of the first ascent began;

A moon-bright face in a sombre cloud of hair,

A Woman sat in a pale lustrous robe.

A rugged and ragged soil was her bare seat,

Beneath her feet a sharp and wounding stone.

SHP-41 of Feb23

एक अवनत और नीचे, क्षीण-निर्बल क्षेत्र से

उस प्रथम आरोह के आवेश का आरम्भ था;

चन्द्र-जैसा दीप्त आनन, मेघ-केशों से घिरा

पीत द्युतिमय वस्त्र धारे, **'देवि'** बैठी थी वहां ।

भूमि-खुरदुर थी विषम-सी, हीन उस की आसनी

इक नुकीली घाव देती, चरण-नीचे थी शिला ।

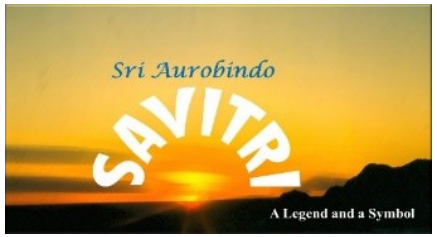

Savitri B07 C04 P503-505 (AD)

A divine pity on the peaks of the world,

A spirit touched by the grief of all that lives,

She looked out far and saw from inner mind

This questionable world of outward things,

Of false appearances and plausible shapes,

This dubious cosmos stretched in the ignorant Void,

The pangs of earth, the toil and speed of the stars

And the difficult birth and dolorous end of life.

SHP-41 of Feb23

'देवि-करुणा-भगवती' वह थी विराजित जग-शिखर !

'आत्मा' संतप्त थी जो शोक-प्राणी-मात्र से !

देखती अति-दूर थी वह मनस्-अंतर से सभी—

संदिग्ध इस संसार की हर बाह्यदर्शी वस्तु को

सत्य-जैसे-भासते आकार-मिथ्या-रूप को

संदेह-सी फैली हुई यह सृष्टि तामस-शून्य में

इस धरा की वेदना, श्रम-तारकों के वेग को !

जीवनों के जन्म-दारुण, अंत-पीड़ापूर्ण को !!

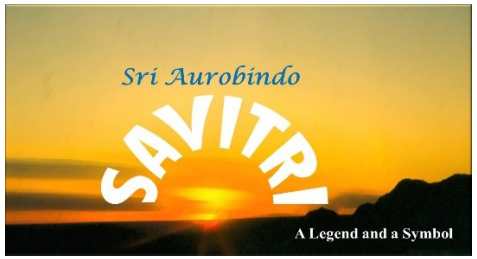

Savitri B07 C04 P503-505 (AD)

SHP-41 of Feb23

Accepting the universe as her body of woe,
The Mother of the seven sorrows bore
The seven stabs that pierced her bleeding heart:
The beauty of sadness lingered on her face,
Her eyes were dim with the ancient stain of tears.

Her heart was riven with the world's agony
And burdened with the sorrow and struggle in Time,
An anguished music trailed in her rapt voice.

स्वीकार जग के कष्ट को निज-काय-पीड़ा रूप में !
धारती थी **'दिव्य-माता'**, सप्त उन संताप को !
सात जो आघात उसका बींधते उर-रक्तमय !
छा रही थी शोक-शोभा करुण-मुख पर सर्वदा !
हो गई थी दृष्टि धूमिल, अश्रु गत-गत-दाग से !!

वेदना से इस जगत् की हृदय छलनी हो गया !
और बोझिल हो **'युगों'** के शोक से संघर्ष से !
उस विभोरा-वाक् में संगीत दु:ख का बह उठा !

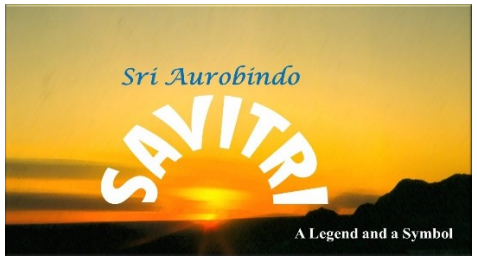

Savitri B07 C04 P503-505 (AD)

Absorbed in a deep compassion's ecstasy,
Lifting the mild ray of her patient gaze,
In soft sweet training words slowly she spoke:
"O Savitri, I am thy secret soul.

To share the suffering of the world I came,
I draw my children's pangs into my breast.

I am the nurse of the dolour beneath the stars;
I am the soul of all who wailing writhe
Under the ruthless harrow of the Gods.

SHP-41 of Feb23

डूब कर तल्लीन हो इक गहन-करुणा-भाव में
धैर्यमय निज-दृष्टि की कोमल-किरण को मृदु उठा
मंद बोली वह छलकते मधुर-कोमल-शब्द में–
“गुप्त, सावित्री तुम्हारी, हूं गहन मैं आत्मा !

मैं बंटाने आई हूं यह यातना संसार की !!
कष्ट अपने बाल के मैं वक्ष-निज में धारती !!

धाय-मां सी पोसती पीड़ा-सकल तारों-तले !
‘आत्मा’ मैं ही यहां रोते-तड़पते जीव की !
धार-निष्ठुर **‘देवताओं’** की कटारी के तले !

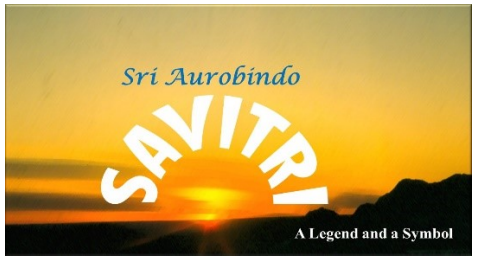

Savitri B07 C04 P503-505 (AD)

I am woman, nurse and slave and beaten beast;
I tend the hands that gave me cruel blows.

The hearts that spurned my love and zeal I serve;
I am the courted queen, the pampered doll,
I am the giver of the bowl of rice,
I am the worshipped Angel of the House.

I am in all that suffers and that cries.
Mine is the prayer that climbs in vain from earth,
I am traversed by my creatures' agonies,
I am the spirit in a world of pain.

SHP-41 of Feb23

दास भी हूं पशु-पिटा औ' धाय भी मैं नार भी !
क्रूर जो आघात देते, हाथ सहलाती वही !

धारती उर जो नकारे प्रेम-मम-आवेग को !
गुड़िया बनी मैं लाड़ली औ' राजरानी भी यहां,
अन्नपूर्णा हूं वही जो अन्न देती पात्र में,
'देवि-वंदित' मैं गृहों में भुवन पूजी जा रही !

यातना सहकर बिलखते जीव सब में मैं बसी !!
जो धरा से व्यर्थ उठती– प्रार्थना हूं मैं वही !!
चीरती है बस मुझे मम-प्राणियों की यंत्रणा !!
व्याप्त मैं ही **'आत्मा'** इस सकल पीड़ा-जगत् में !!

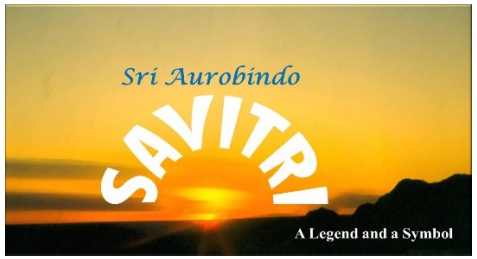

Savitri B07 C04 P503-505 (AD)

The scream of tortured flesh and tortured hearts
Fall'n back on heart and flesh unheard by Heaven
Has rent with helpless grief and wrath my soul.

I have seen the peasant burning in his hut,
I have seen the slashed corpse of the slaughtered child,
Heard woman's cry ravished and stripped and haled
Amid the bayings of the hell-hound mob,
I have looked on, I had no power to save.

SHP-41 of Feb23

चीख तन की, चीख मन की, झेलते जो यातना
लौट गिरतीं देह-उर पर, **'देव'** सुनते ही नहीं
चीरता मम-आत्मा को शोक-निर्बल, क्रोध भी !

कृषक जलता निज-कुटी में दृश्य-दारुण देखती
काट फेंके बालकों के शव बिखरते देखती
चीख भी मैंने सुनी है नग्न-अबला-नार की
भौंकती उस भीड़ में जो नर्क-श्वानों की बनी
देखती असहाय होकर, शक्ति रक्षा की नहीं !

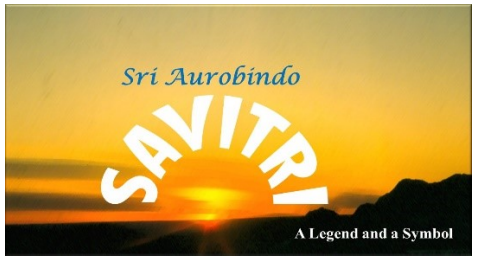

Savitri B07 C04 P503-505 (AD)

SHP-41 of Feb23

I have brought no arm of strength to aid or slay;
God gave me love, he gave me not his force.

I have shared the toil of the yoked animal drudge
Pushed by the goad, encouraged by the whip;
I have shared the fear-filled life of bird and beast,
Its long hunt for the day's precarious food,
Its covert slink and crouch and hungry prowl,
Its pain and terror seized by beak and claw.

ना मदद की, ना हनन की, शक्ति मैं लाई नहीं
प्रेम तो **'प्रभु'** ने दिया, पर शक्ति बांटी ही नहीं !

भार भी मैं ने उठाया, दीन-पशु के बोझ का
ठेलता अंकुश जिसे औ' हांक चाबुक है रहा
पशु-पक्षियों के भीत-जीवन मैं उठाती, सह रही
खोज लंबी औ' अनिश्चित हर दिवस की भोज्य की
टोह उसकी जो दुबकती औ' भटकती भूख से
चोंच-पंजों में फंसे उस कष्ट-भय की वेदना !

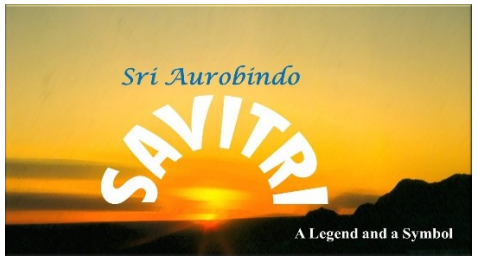

Savitri B07 C04 P503-505 (AD)

I have shared the daily life of common men,
Its petty pleasures and its petty cares,
Its press of troubles and haggard horde of ills,
Earth's trail of sorrow hopeless of relief,
The unwanted tedious labour without joy,
And the burden of misery and the strokes of fate.

I have been pity, leaning over pain
And the tender smile that heals the wounded heart
And sympathy making life less hard to bear.

SHP-41 of Feb23

मैं उठाती नित्य ही सामान्य-जन के बोझ को !
साथ रहती तुच्छ-सुख में, क्षुद्र-चिन्ता साथ भी !
आपदा के बोझ में औ' पस्त-मंडल-कष्ट में !
मार्ग दु:खमय इस धरा का, आस जिसमें है नहीं !
असह्य-अप्रिय घोर-श्रम जो रिक्त है आनन्द से !
भार देती दुर्दशा, आघात निर्मम-भाग्य का !

रूप करुणा का स्वयं हर कष्ट पर झुकती दया !
घाव उर के भर सके जो मधुर मैं ही स्मिता !
सांत्वना हूं जो बनाती मार्ग-जीवन कुछ सुगम !

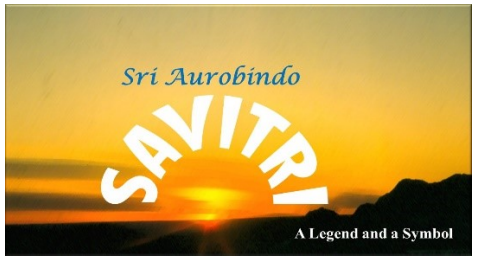

Savitri B07 C04 P503-505 (AD)

Man has felt near my unseen face and hands;
I have become the sufferer and his moan,
I have lain down with the mangled and the slain,
I have lived with the prisoner in his dungeon cell.

Heavy on my shoulders weighs the yoke of Time:
Nothing refusing of creation's load,
I have borne all and know I still must bear:
Perhaps when the world sinks into a last sleep,
I too may sleep in dumb eternal peace.

SHP-41 of Feb23

मनुज अनुभव कर रहा मम अलख मुख को, हाथ को;
संग मनु की यंत्रणा में और उसकी आह में !
संग आहत लोटती हूं औ' बधित के साथ भी !
बंदियों के साथ जीती कोठरी-पाताल में !

'काल-कोल्हू' बोझ सारा कंध मेरे ही रखा !
ना नकारा है कभी भी बोझ कोई सृष्टि का !
भार मैंने सब उठाया, फिर उठाना– जानती !
अंत-निद्रा में कभी जब डूब जायेगा जगत्–
सो सकूंगी मैं तभी इक मूक-शाश्वत शांति में !

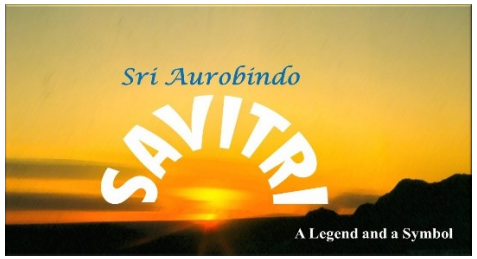

Savitri B07 C04 P503-505 (AD)

I have borne the calm indifference of Heaven,
Watched Nature's cruelty to suffering things
While God passed silent by nor turned to help.

Yet have I cried not out against his will,
Yet have I not accused his cosmic Law.

Only to change this great hard world of pain
A patient prayer has risen from my breast;
A pallid resignation lights my brow,
Within me a blind faith and mercy dwell;
I carry the fire that never can be quenched
And the compassion that supports the suns.

SHP-41 of Feb23

शांत-निष्ठुर परिउपेक्षा **'देव'** की मैं ने सही
देखती हूं– क्रूर प्रकृति, कष्ट देती वस्तु को
शांत **'प्रभु'** तक गुज़र जाते, मदद को मुड़ते नहीं !

किंतु **'प्रभु'** का वाद करके मैं कभी रोई नहीं !
ना लगाती हूं कभी आरोप **'जग-विधि-ईश'** पर !

बस बदलने सृष्टि की इस कठिन-पीड़ा-गहन को !!
धैर्य से मेरे हृदय से उठ रही इक प्रार्थना !!
भाल मेरे आस-हत इक ज्योति चमके क्षीण-सी
दया बसती मम-हृदय में, गहन-श्रद्धा साथ में;
अग्नि लेकर चल रही हूं जो कभी ना बुझ सके
और करुणा दे रही जो धारती हर सूर्य को !

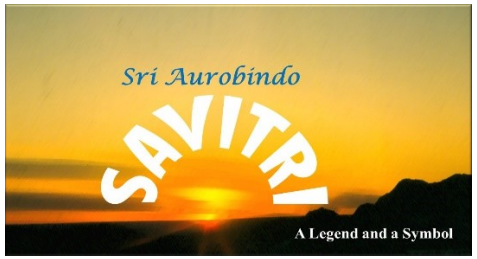

Savitri B07 C04 P503-505 (AD)

I am the hope that looks towards my God,

My God who never came to me till now;

His voice I hear that ever says 'I come':

I know that one day he shall come at last."

SHP-41 of Feb23

जो निहारे ओर **'प्रभु'** की मैं खड़ी आशा वही !!

'ईश' मेरे जो कभी भी आज तक आये नहीं !!

किंतु वाणी सुन रही **'उसकी'** सतत– **'मैं आ रहा'** !!

जानती हूं अंत में **'वह'** एक दिन तो आयेगा" !!!

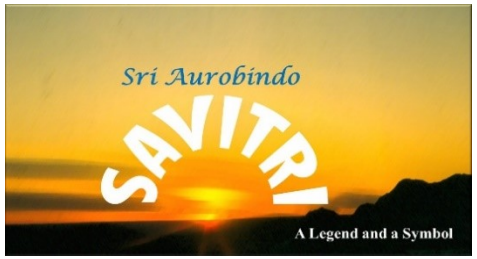

Savitri B07 C04 P507-508 (AD)

And Savitri heard the voice, the echo heard
And turning to her being of pity spoke:
"Madonna of suffering, Mother of grief divine,
Thou art a portion of my soul put forth
To bear the unbearable sorrow of the world.

Because thou art, men yield not to their doom,
But ask for happiness and strive with fate;
Because thou art, the wretched still can hope.

But thine is the power to solace, not to save.

SHP-42 of Feb23

'वाक्देवी' को सुना औ' गूंज सावित्री सुनी
और मुड़कर आत्मसत्ता **'देवि-करुणा'** से कहा—
"**देवि**, दु:ख सब धारती! हे **'दिव्य-माता'** शोक की!
अंश तू **'मम-आत्मा'** का जो यहां भेजा गया!
इस जगत् के असह्य दु:ख को सहन करने के लिये।

क्योंकि **'तू'** है, नाश-निज पर मनुज झुकता है नहीं!
किंतु तब भी मांगता सुख, जूझता है भाग्य से!
क्योंकि **'तू'** है, रख सके हतभाग भी आशा यहां!!

शांति देती शक्ति **'तेरी'**, पर बचा पाती नहीं ।

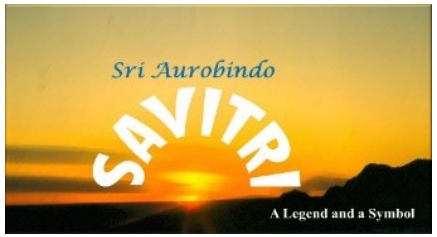

Savitri B07 C04 P507-508 (AD)

One day I will return, a bringer of strength,
And make thee drink from the Eternal's cup;
His streams of force shall triumph in thy limbs
And Wisdom's calm control thy passionate heart.

Thy love shall be the bond of humankind,
Compassion the bright key of Nature's acts:
Misery shall pass abolished from the earth;
The world shall be freed from the anger of the Beast,
From the cruelty of the Titan and his pain.
There shall be peace and joy for ever more."

SHP-42 of Feb23

लौटकर **'मैं'** एक दिन वह **'शक्ति-परमा'** लाऊंगी !
और **'तुझको'** पान दूंगी, उस **'चिरन्तन-पात्र'** से !
लाएगी जय, अंग **'तेरे'**, धार **'उसकी शक्ति'** की !
साध लेगी **'शांत-प्रज्ञा'** तव हृदय-आवेश को !

'प्रेम-तेरा' बांध लेगा जाति-मनु को सूत्र में !
'गहन-करुणा', दीप्त-कुंजी, काज-प्रकृति के लिये !
इस धरा से यातना परिपूर्णत: मिट जायेगी !!
मुक्त होगा यह जगत् उस **'आसुरी-पशु-क्रोध'** से !!
छूट जायेगी निठुरता और पीड़ा **'दानवी'** !!
आ बसेंगे **'शांति-सुख'** ही सतत बढ़ने के लिये" !!

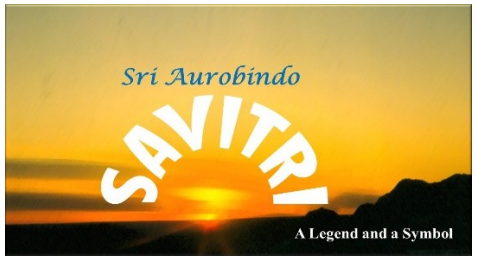

Savitri B07 C05 P526 (AD)

But since She knows the toil of mind and life

As a mother feels and shares her children's lives,

She puts forth a small portion of herself,

A being no bigger than the thumb of man

Into a hidden region of the heart

To face the pang and to forget the bliss,

To share the suffering and endure earth's wounds

And labour mid the labour of the stars.

SHP-43 of Feb23

चूंकि **'वह'** तो जानती है, प्राण-मन-संघर्ष को !!

शिशु-जीवनों को **'मां'** यथा अनुभूत-करती-बांटती !!

अति-अल्प अपना-अंश **'वह'** इस हेतु नीचे भेजती–

एक सत्ता जो मनुज के ना-अंगूठे से बड़ी

मनु-हृदय के गर्भगृह में **'वह'** छिपा देती उसे !!

ताकि वह दु:ख झेल पाये, भूलकर आनन्द को,

घाव देती इस धरा के कष्ट सारे सह सके,

और श्रम भी कर सके इस यत्न करती सृष्टि में ।।

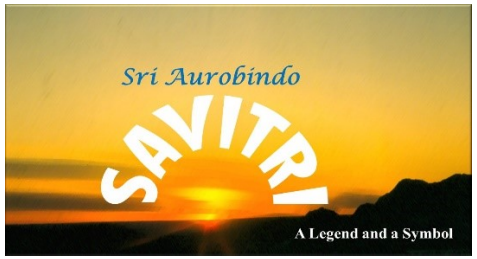

Savitri B07 C05 P528 (AD)

In its deep lotus home her being sat

As if on concentration's marble seat,

Calling the mighty Mother of the worlds

To make this earthly tenement Her house.

SHP-44 of Feb23

गहन-भीतर हृत्-कमल में बैठकर वह आत्मा

यथा आसन-मर्मरी एकाग्र पत्थर-सा बना,

'शक्तिरूपा-जगत्जननी' को बुलाती-टेरती !!

'मां'! बना लो धाम अपना, तुच्छ-पार्थिव-गेह में !!

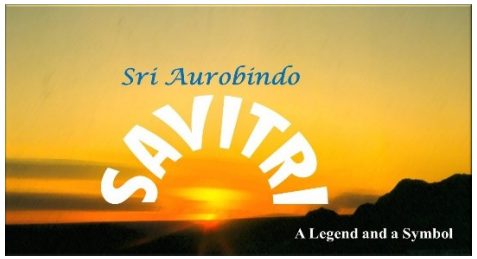

Savitri B07 C05 P529 (AD)

A channel of the mighty Mother's choice,

The immortal's will took into its calm control

Our blind or erring government of life;

A loose republic once of wants and needs,

Then bowed to the uncertain sovereign mind,

Life now obeyed to a diviner rule

And every act became an act of God.

SHP-45 of Feb23

'शक्तिपरमा-मातु' की बन चाह का इक उपकरण !

'संकल्प-शाश्वत' ने उसे निश्चल-नियंत्रण में लिया !

वह प्राण-शासित अंधता जो थी प्रमादों की बनी,

इक शिथिल-सा-संघ जो मांगों-अभावों से भरा,

फिर अनिश्चित-बुद्धि के जो राज्य को करता नमन,

मानता जीवन वही अब, **'दिव्यतर-निर्देश'** को !

और उसका कर्म-हरकुछ, कर्म **'प्रभु'** का बन गया !!

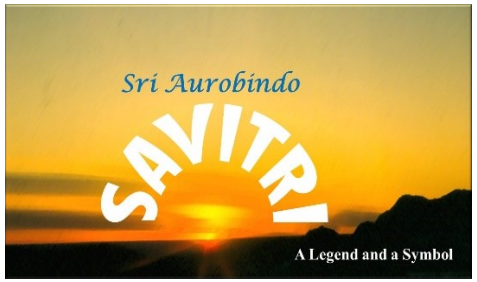

Savitri B07 C05 P529 (AD)

In the kingdom of the lotus of the heart

Love chanting its pure hymeneal hymn

Made life and body mirrors of sacred joy

And all the emotions gave themselves to God.

SHP-45 of Feb23

मधुर-शीतल-हृत्-कमल के उस समर्पित-राज्य में

'प्रेम-पावन', हरि-मिलन के गीत ही गाता रहा !

हर्ष-निर्मल की झलक थी– देह तक में, प्राण में !

और सारी भावनायें **'ईश-अर्पित'** हो गईं !!

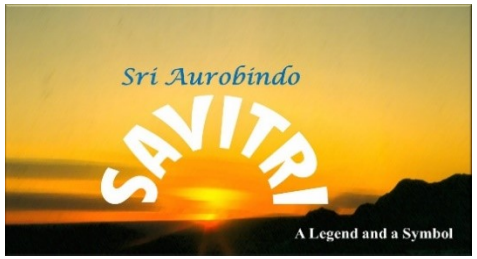

Savitri B07 C05 P531 (AD)

Then lifts the mind a cry of victory:

"O soul, my soul, we have created Heaven,

Within we have found the kingdom here of God,

His fortress built in a loud ignorant world.

Our life is entrenched between two rivers of Light,

We have turned space into a gulf of peace

And made the body a capitol of bliss.

What more, what more, if more must still be done?"

SHP-46 of Feb23

तब विजय का घोष करती बुद्धि मानव की यथा–

''आत्मा ! मम-आत्मा ! यह **'स्वर्ग'** हमने रच लिया !

अंतरों में प्राप्त हमने राज्य **'प्रभु'** का कर लिया !

दुर्ग **'उसका'** बन गया इस अज्ञ-जग के शोर में !

घिर-बसा जीवन हमारा– **'ज्योति-द्वय'**, नद-मध्य में !

आकाश-अंत: बदल डाला, **'शांति-खाड़ी'** में यहां !

और काया बन गई इक **'देवमंदिर'** हर्ष का !

और क्या ? अब और क्या ? कुछ शेष करना रह गया''?

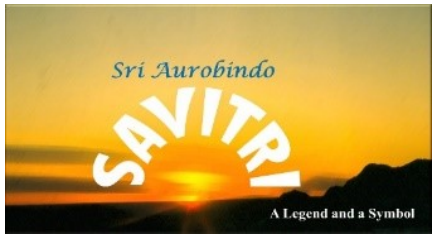

Savitri B07 C05 P531 (AD)

In the slow process of the evolving spirit,
In the brief stade between a death and birth
A first perfection's stage is reached at last;
Out of the wood and stone of our nature's stuff
A temple is shaped where the high gods could live.
Even if the struggling world is left outside
One man's perfection still can save the world.

There is won a new proximity to the skies,
A first betrothal of the Earth to Heaven,
A deep concordat between Truth and Life:
A camp of God is pitched in human time.

SHP-46 of Feb23

मंद विकसित हो रही जो **'चैत्य-मानव-आत्मा''**
मृत्यु-जीवन बीच के सीमित-अखाड़े में यहां
अंत में तो प्राप्त होती, एक **'पहली-पूर्णता'** !
काठ-पत्थर से बनी इस मनुज-प्रकृति से निकल–
एक बनता **'देव-आलय'**, उच्च-सुरगण के लिये !
छूट बाहर यह जगत् संघर्ष यद्यपि कर रहा
पर धरा को बचा सकती इक मनुज की पूर्णता !

दिव्य-लोकों की निकटता-नवल हमने जीत ली !
इस **'धरा'** की **'स्वर्ग'** से पहली-सगाई हो गई !
संधि-गहरी यह हुई अब **'सत्य'**-**'जीवन'** मध्य में !
और जीवन-मानवी में शिविर **'प्रभु'** का लग गया !!

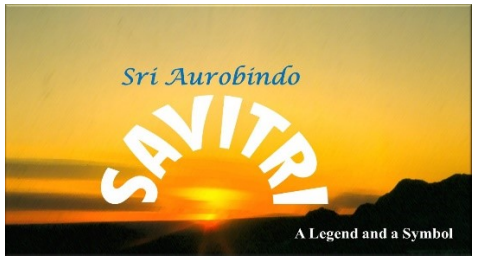

Savitri B07 C06 P537-538 (AD)

Banish all thought from thee and be God's void.

Then shalt thou uncover the Unknowable

And the Superconscient conscious grow on thy tops;

Infinity's vision through thy gaze shall pierce;

Thou shalt look into the eyes of the Unknown,

Find the hid Truth in things seen null and false,

Behind things known discover Mystery's rear.

SHP-47 of Feb23

तज विचारों को सकल तू शून्य बन जा **'ईश'** का !

तब हटा तू पायेगी— **'अज्ञेय'** का वह आवरण

और बढ़ती तव-शिखर पर जागकर **'तत्-चेतना'**,

भेदती **'निस्सीम-वीक्षा'**, दृष्टि को तेरी यहां,

आंख में **'अज्ञात'** के तू झांक पायेगी तभी,

'सत्य-गुह्य' पा जायेगी हर भ्रान्त-लगती-वस्तु में !

खोज लेगी ज्ञात-आवृत **'गूढ़ता'** के गूढ़ को !!

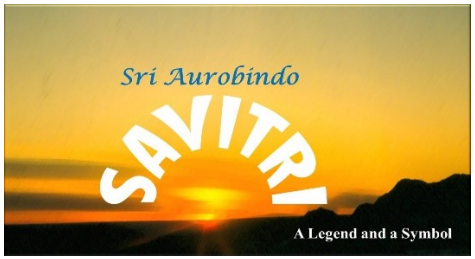

Savitri B07 C06 P537-538 (AD)

Thou shalt be one with God's bare reality

And the miraculous world he has become

And the diviner miracle still to be

When Nature who is now unconscious God

Translucent grows to the Eternal's light,

Her seeing his sight, her walk his steps of power

And life is filled with a spiritual joy

And Matter is the Spirit's willing bride.

SHP-47 of Feb23

'तत्व-प्रभु' के तथ्य से तू एक ही बन जायेगी

और **'वह'** जो बन गया है यह चमत्कारी जगत् !!

और **'वह'** जो दिव्यतर भावी-अचम्भा आ रहा !!

विश्व-प्रकृति जो अभी तक बस अचेतन-**'ईश'** है,

जब बनेगी पारभासी उस **'चिरन्तन-ज्योति'** से,

तब प्रकृति के दृष्टि-पग भी, **'शक्ति-प्रभु'** के ही कदम

और जीवन भर उठेगा एक आत्मिक-हर्ष से,

औ' करेगी **'जड़-वधू'**, **'परमात्म'** का खुद शुभवरण !

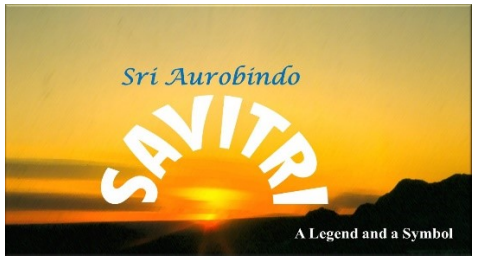

Savitri B07 C06 P537-538 (AD)

SHP-47 of Feb23

Consent to be nothing and none, dissolve Time's work,

Cast off thy mind, step back from form and name.

Annul thyself that only God may be.

काल-कृत यह सब मिटा, बन कुछ-नहीं कोई-नहीं !!

फेंक दे निज-बुद्धि को, तज नाम अपना रूप भी !!

यूं मिटा दे तू स्वयं को— शेष केवल **'ईश'** हो !!

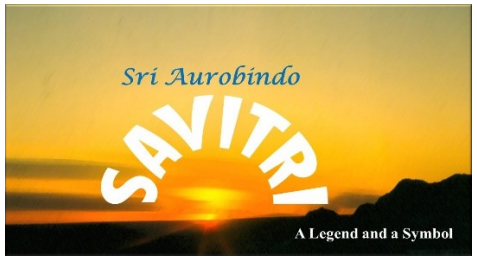

Savitri B07 C06 P542 (AD)

Although his ego claims the world for its use,

Man is a dynamo for the cosmic work;

Nature does most in him, God the high rest:

Only his soul's acceptance is his own.

SHP-48 of Feb23

मनु-अहं उद्घोष करता— यह जगत् मेरे लिये,

सृष्टि-कर्मों में मगर इक यंत्र-सा मानव यहां;

सब करे उसमें प्रकृति, फिर शेष-उन्नत **'प्रभु'** करें !!

सिर्फ़ स्वीकृति आत्मा की, है निजी उसकी यहां !!

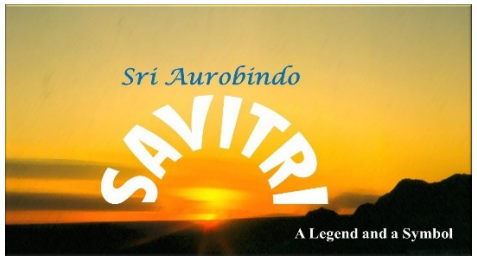

Savitri B10 C03 P634 (AD)

But Savitri replied to the dire God:

"Yes, I am human. Yet shall man by me,

Since in humanity waits his hour the God,

Trample thee down to reach the immortal heights,

Transcending grief and pain and fate and death.

Yes, my humanity is a mask of God:

He dwells in me, the mover of my acts,

Turning the great wheel of his cosmic work.

SHP-49 of Feb23

किंतु सावित्री-कथन-अथ, यम-भयंकर-देव से—

“हां, मानवी हूं मैं मगर, मेरा सहारा ले मनुज,

क्योंकि मनु में निज-घड़ी की **‘प्रभु’** प्रतीक्षा कर रहे,

कुचल तुझको, पहुंच जायेगा अमरता के शिखर !

शोक, पीड़ा से परे ! विधि, मृत्यु तक के पार भी !!

रूप मेरा मानवी तो, हां मुखौटा **‘ईश’** का—

वास मुझमें कर रहा **‘वह’**, कार्य-मम करता **‘वही’** !!

‘वह’ घुमाता विश्व-व्यापी वृहत्-लीला-चक्र को !!

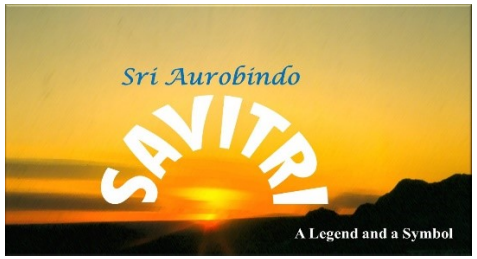

Savitri B10 C03 P634 (AD)

I am the living body of his light,

I am the thinking instrument of his power,

I incarnate Wisdom in an earthly breast,

I am his conquering and unslayable will.

The formless Spirit drew in me its shape;

In me are the Nameless and the secret Name."

SHP-49 of Feb23

मैं स्वयं **'उस-ज्योति'** की जीवंत-काया हूं यहां !

मैं स्वयं **'उस-शक्ति'** का ही मनन-जाग्रत-यंत्र हूं !

'परम-प्रज्ञा-अवतरित' मैं एक पार्थिव देह में !

मैं अमोघा औ' अबध्या शक्ति **'उस-संकल्प'** की !

आकार अपना रच गया मुझमें **'निराकारी-परम'** !!

निहित मुझमें **'तत्-अनामी'** और **'गुह्यतम-नाम'** भी" !!

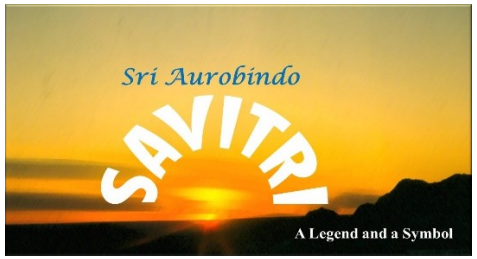

Savitri B10 C04 P644 (AD)

SHP-50 of Feb23

How shalt thou bring the Everlasting here?

There is no house for him in hurrying Time.

'उस-सनातन' को यहां तू लायेगी कैसे-भला ?

घर नहीं **'उस'** के लिये इस भागते-से-काल में !!

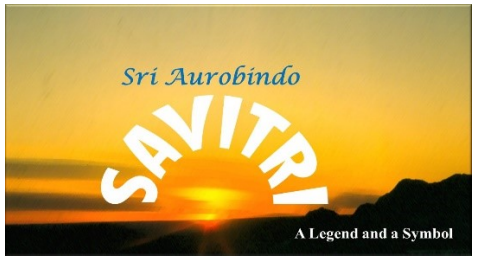

Savitri B11 C01 P704-705 (AD)

Abandoning the dubious Middle Way

A few shall glimpse the miraculous Origin

And some shall feel in you the secret Force

And they shall turn to meet a nameless tread,

Adventurers into a mightier Day.

Ascending out of the limiting breadths of mind,

They shall discover the world's huge design

And step into the Truth, the Right, the Vast.

SHP-51 of Feb23

त्याग कर संदिग्ध-से इस मध्य-मानव-मार्ग को,

झलक पायेंगे विरल कुछ, **'आदि-उद्गम-दिव्य'** की !

गुप्त **'तेरी-शक्ति'** को अनुभूत कुछ कर पायेंगे !

वे मुड़ेंगे भेंटने बेनाम-सी पदचाप से,

उस महत्तर **'युग-दिवस'** में वे बढ़ेंगे साहसी !!

पार वे चढ़ जायेंगे, मन-बुद्धि-सीमा तोड़ कर !

खोज लेंगे सृष्टि की वे गहन-विस्तृत-योजना !

वे करेंगे आगमन– **'ऋत'** में, **'वृहत्'** में, **'सत्य'** में !!

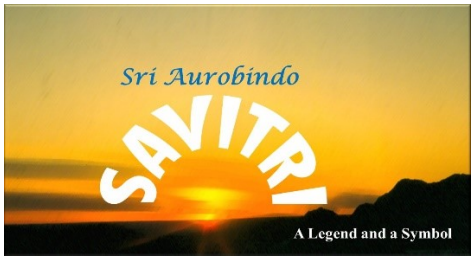

Savitri B11 C01 P704-705 (AD)

You shall reveal to them the hidden eternities,

The breath of infinitudes not yet revealed,

Some rapture of the bliss that made the world,

Some rush of the force of God's omnipotence,

Some beam of the omniscient Mystery.

SHP-51 of Feb23

'तू' दिखा देगी उन्हें अति-गुप्त-शाश्वत-गूढ़ता,

अव्यक्त जो अबतक यहां विस्तार सीमाहीन का–

अंश देगी **'तू'** उन्हें उस सृष्टिकर्ता-हर्ष का !

वेग का भी अंश **'प्रभु'** की **'सर्वकारी-शक्ति'** का !

अंश किरणों का **'परमगुह्य'**, **'सर्वज्ञाता-स्रोत'** का !

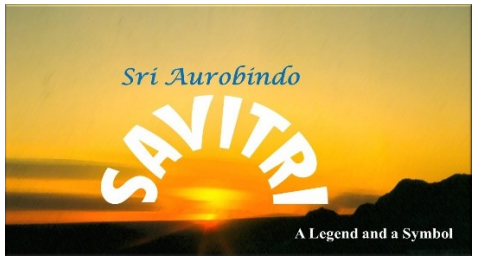

Savitri B11 C01 P704-705 (AD)

But when the hour of the Divine draws near,

The Mighty Mother shall take birth in Time

And God be born into the human clay

In forms made ready by your human lives.

Then shall the Truth supreme be given to men.

SHP-51 of Feb23

किंतु जब वह निकट आयेगा **'मुहूरत-भागवत'** !!

जन्म लेंगी **'शक्तिरूपा-जगत्जननी'** काल में !!

और माटी-मानवी में **'प्रभु'** करेंगे अवतरण !!

तैयार जो **'तू'** ने किये आकार-जीवन-मानवी !!

मनुजाति **'परमा-सत्य'** को बस जान पायेगी तभी !!

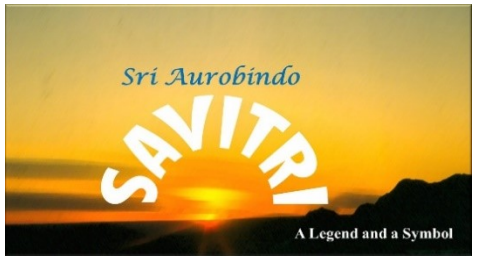

Savitri B11 C01 P708-710 (AD)

"When superman is born as Nature's king
His presence shall transfigure Matter's world:
He shall light up Truth's fire in Nature's night,
He shall lay upon the earth Truth's greater law;
Man too shall turn towards the Spirit's call.

Awake to his hidden possibility,
Awake to all that slept within his heart
And all that Nature meant when earth was formed
And the Spirit made this ignorant world his home,
He shall aspire to Truth and God and Bliss.

SHP-52 of Feb23

जब **'प्रकृति-नृप परामानव'**, जन्म लेगा भूमि पर !
'तत्-उपस्थिति' ही करेगी **'जड़-जगत्'** रूपान्तरित !
और प्रकृति की निशा में **'सत्य-ज्वाला'** को जला—
रोप देगा इस धरा पर— **'विधि-महत्तर-सत्य'** को
तब मनुज तक मुड़ सकेगा, ओर **'प्रभु-आह्वान'** को।

संभावना-निज जो छिपी, बस जाग उसके ही लिये !
जो हृदय में सो रहा, बस जाग उसके ही लिये !
जो **'प्रकृति'** का सकल-आशय, जब बनी थी यह धरा !
और जब जग-अज्ञ को निज-धाम 'प्रभु' ने था चुना !
तब अभीप्सा मनु करेगा– **'सत्य ! प्रभु ! आनन्द !'** की।

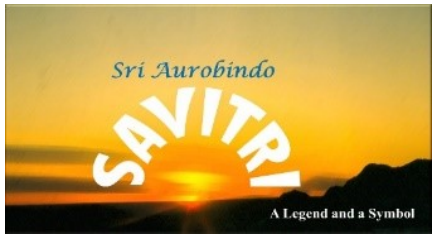

Savitri B11 C01 P708-710 (AD)

Interpreter of a diviner law
And instrument of a supreme design,
The higher kind shall lean to lift up man.
Man shall desire to climb to his own heights.

The truth above shall wake a nether truth,
Even the dumb earth become a sentient force.

The Spirit's tops and Nature's base shall draw
Near to the secret of their separate truth
And know each other as one deity.

SHP-52 of Feb23

कर सके जो भाष्य, विधि के **'दिव्यतर-आलेख'** का
उपकरण उस योजना का, जो **'परम'** से आ रही,
आ झुकेगा लोक-उन्नत, मनुज के उत्थान को ।
औ' अभीप्सा मनु करेगा– निज-शिखर आरोह की ।

तल-सत्य को देगा जगा, जो **'सत्य'** बैठा शीर्ष पर,
'शक्ति-चेतन' बन उठेगी, मूक तक निर्बल-धरा ।

'शिखर-आत्मा', नींव-प्रकृति आ जुड़ेंगे साथ में !
निकट अपने सत्य के, उस विलग बैठे भेद के !
औ' परस्पर जान लेंगे– **'देव'** हैं वे एक ही !

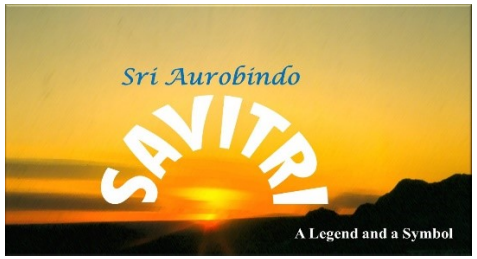

Savitri B11 C01 P708-710 (AD)

The Spirit shall look out through Matter's gaze
And Matter shall reveal the Spirit's face.

Then man and superman shall be at one
And all the earth become a single life.

Even the multitude shall hear the Voice
And turn to commune with the Spirit within
And strive to obey the high spiritual law:
This earth shall stir with impulses sublime,
Humanity awake to deepest self,
Nature the hidden godhead recognise.

SHP-52 of Feb23

नेत्र-जड़ता से लखेगी, **'आत्मा'** की चेतना
और जड़ता में दिखेगा, **'आत्म-आनन'** ही यहां।

'परामानव' और मानव तब बनेंगे एक ही!
और जीवन सकल-भू का एक-मय बन जायेगा!

'वाक्' को सुन पायेंगे, सामान्य मानव तक यहां!
और अंतर में मुड़ेंगे— उस **'परम'** से बोलने
यत्न चलने का करेंगे, आत्म-श्रेयस्-मार्ग पर :
हिल उठेगी पूर्णत: आवेग-उत्तम से धरा
आत्म-गहना-चेतना में जाति-मनु जग जाएगी!
जान लेगी **'गुप्त-प्रभु'** को बाह्य-प्रकृति भी यहां !

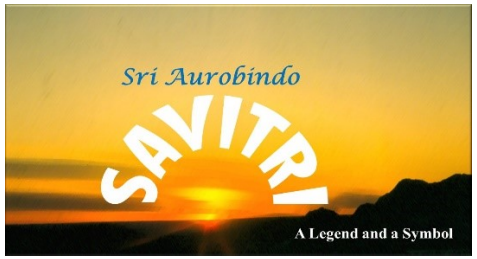

Savitri B11 C01 P708-710 (AD)

Even the many shall some answer make
And bear the splendour of the Divine's rush
And his impetuous knock at unseen doors.

A heavenlier passion shall upheave men's lives,
Their mind shall share in the ineffable gleam,
Their heart shall feel the ecstasy and the fire.

Earth's bodies shall be conscious of a soul;
Mortality's bondslaves shall unloose their bonds,
Mere men into spiritual beings grow
And see awake the dumb divinity.

SHP-52 of Feb23

दे सकेंगे अल्प-उत्तर, बहुल जन-सामान्य भी !
और वाहन बन सकेंगे, विपुल महिमा **'दिव्य'** का !
अलख-द्वारों पर सुनेंगे, प्रबल **'उसकी'** दस्तकें !

आ उठेंगे मनुज-जीवन, **'दिव्यतर-आवेग'** से !
बुद्धि-मानव भाग लेगी, **'अकथ-आभा-दीप्त'** में !
अनुभूत मनु-अंतर करेंगे— **'हर्ष-परमा'**, **'अग्नि'** को !

सजग होंगी आत्मा-प्रति, देह तक इस भूमि की !
खोल बंधन-निज सकेंगे, दास-बंधुआ, मृत्यु के !
सहज-मानव तक बढ़ेंगे आत्म-सत्ता रूप में !
और जाग्रत देख लेंगे— **'मूक-गोपित-दिव्यता'** !

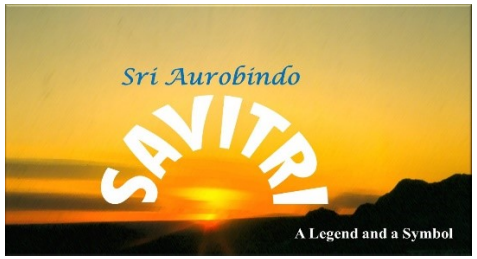

Savitri B11 C01 P708-710 (AD)

Intuitive beams shall touch the nature's peaks,
A revelation stir the nature's depths;
The Truth shall be the leader of their lives,
Truth shall dictate their thought and speech and act,
They shall feel themselves lifted nearer to the sky,
As if a little lower than the gods.

For knowledge shall pour down in radiant streams
And even darkened mind quiver with new life
And kindle and burn with the Ideal's fire
And turn to escape from mortal ignorance.

SHP-52 of Feb23

शिखर-प्रकृति छू सकेंगी रश्मियां संबोधि की
और प्रकृति-तल हिलेंगे, एक अंतर-दर्श से
मार्ग-नेता **'सत्य'** होगा, मनुज-जीवन का यहां
'सत्य' ही आदेश देगा— बुद्धि, वाचा, कर्म को,
पायेंगे वे तो स्वयं को निकटतर **'आकाश'** के !
अल्प ही बस मनुज नीचे **'देवताओं'** से यथा !!

क्योंकि नीचे बह चलेंगी— दीप्त-धारा ज्ञान की
औ' सिहरती प्राण-नव से तमस्-अंधी बुद्धि भी
जल उठेंगे प्रज्ज्वलित, **'आदर्श'** की वे अग्नि से
औ' मुड़ेंगे मार्ग-नव पर, मर्त्य-अज्ञा त्यागने !

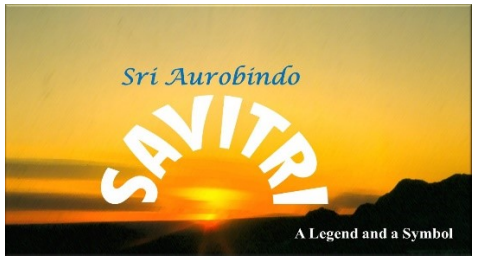

Savitri B11 C01 P708-710 (AD)

The frontiers of the Ignorance shall recede,
More and more souls shall enter into light,
Minds lit, inspired, the occult summoner hear
And lives blaze with a sudden inner flame
And hearts grow enamoured of divine delight
And human wills tune to the divine will,
These separate selves the Spirit's oneness feel,
These senses of heavenly sense grow capable,
The flesh and nerves of a strange ethereal joy
And mortal bodies of immortality.

SHP-52 of Feb23

सीमा सभी **'अज्ञान'** की तब छूट पीछे जायेंगी !
अधिक-संख्या आत्मायें **'ज्योति'** में बढ़ आयेंगी !
दीप्त-प्रेरित बुद्धि तब सुन पायेगी **'गुह्य-होत्र'** को !
और सहसा ज्वलित-जीवन, एक **'अंतर-अग्नि'** से !
बढ़ चलेगा अंतरों में राग **'दिव्यानन्द'** का !
संकल्प-मानव जुड़ सकेंगे, **'भागवत-संकल्प'** से !
पृथक्-सत्ता जान लेंगी, **'आत्म'** से निज-एकता !
इंद्रियां भी पा सकेंगी, बोध-क्षमता **'दिव्य'** की !
जी सकेंगे मांस-नाड़ी, अलख-अद्भुत **'मोद'** में !!
औ' **'अमरता'** पा सकेगी क्षणिक काया मर्त्य की !!

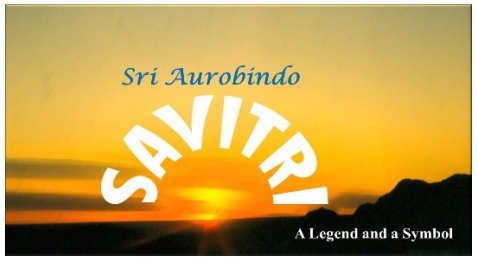

Savitri B11 C01 P708-710 (AD)

A divine force shall flow through tissue and cell
And take the charge of breath and speech and act
And all the thoughts shall be a glow of suns
And every feeling a celestial thrill.

Often a lustrous inner dawn shall come
Lighting the chambers of the slumbering mind;
A sudden bliss shall run through every limb
And Nature with a mightier Presence fill.

SHP-52 of Feb23

'शक्ति-दैवी' बह चलेगी– हर शिरा में कोश में !
और संचालन करेगी– श्वास, वाचा, कर्म का !
सब विचारों को बना– **'आलोक सूर्यों का'** यथा !
एक **'दैवी-हर्ष'** से हर भावना भर जायेगी !

और प्राय: ज्योतिदायी उदित अंतर में **'उषा'** !
कर उठेगी वह प्रकाशित– सुप्त-मन के कक्ष को !
'हर्ष' सहसा फैलता– हर अंग में प्रत्यंग में !
और प्रकृति भर उठेगी– इक महत्तर **'अस्ति'** से !

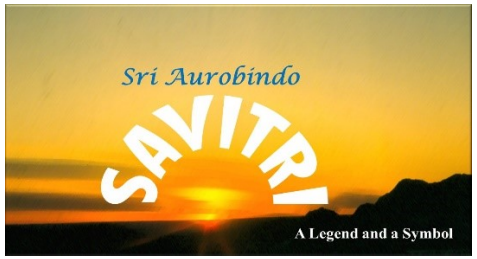

Savitri B11 C01 P708-710 (AD)

Thus shall the earth open to divinity

And common natures feel the wide uplift,

Illumine common acts with the Spirit's ray

And meet the deity in common things.

Nature shall live to manifest secret God,

The Spirit shall take up the human play,

This earthly life become the life divine."

SHP-52 of Feb23

यों खुलेगी यह धरा तब **'दिव्यता'** की ओर को !

और जन-मन पायेंगे अनुभूति वृह-उत्थान की !

कर्म-साधारण प्रकाशित **'आत्मा की रश्मि'** से !

औ' मिलेगा **'देवता'** सामान्य-सी हर वस्तु में !

और प्रकृति तो जियेगी– व्यक्त करने निहित-प्रभु !

मनुज-लीला-भार सारा, **'आत्मा'** लेगी उठा !

यह धरा-जीवन बनेगा– **'दिव्य-जीवन'** तब यहां" !!

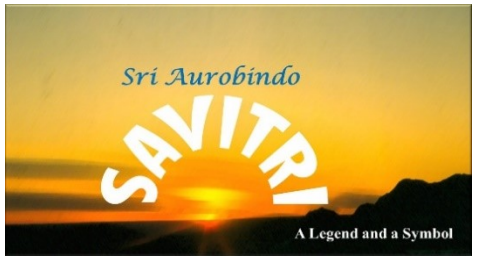

Savitri B12 Epilogue P720 (AD)

For not for ourselves alone our spirits came

Out of the veil of the Unmanifest,

Out of the deep immense Unknowable

Upon the ignorant breast of dubious earth,

Into the ways of labouring, seeking men,

Two fires that burn towards that parent Sun,

Two rays that travel to the original Light.

SHP-53 of Feb23

क्योंकि निज-हित को नहीं आईं **'हमारी-आत्मा'** !!

अज्ञात उस **'अव्यक्त'** का गहरा हटा कर आवरण,

निकल बाहर उस गहनतम औ' महत् **'अज्ञेय'** से,

इस अनिश्चित और धूमिल अज्ञ-भू के वक्ष पर,

खोज करते और श्रमरत मानवों के मार्ग पर,

'अग्नि-द्वय' जो जल रहीं उस **'सूर्य-उद्गम'** के लिये !!

'दो-किरण' जो जा रहीं उस **'ज्योति-मौलिक'** ओर ही !!

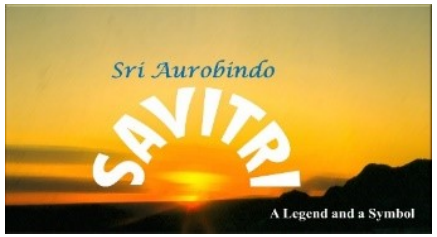

Savitri B12 Epilogue P720 (AD)

To lead man's soul towards Truth and God we are born,

To draw the chequered scheme of mortal life

Into some semblance of the Immortal's plan,

To shape it closer to an image of God,

A little nearer to the Idea divine.

SHP-53 of Feb23

आए **'हम'**, मनु-आत्मा को ओर **'प्रभु-सत्'** ले चलें !

मर्त्य-जीवन की बिरंगी योजना को ला सकें—

अनुरूप-कुछ आकार में **'संकल्प-शाश्वत'** की तरह !

'ईश-प्रतिमा' के निकटतर रूप गढ़ने के लिये !!

और-थोड़ा-सा निकटतर **'दिव्य-परमा-भाव'** के !!

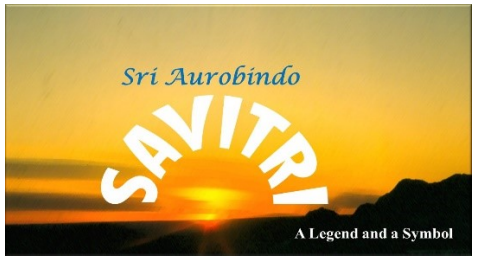

Savitri B12 Epilogue P723-724 (AD)

If this is she of whom the world has heard,

Wonder no more at any happy change.

Each easy miracle of felicity

Of her transmuting heart the alchemy is.

Then one spoke there who seemed a priest and sage:

"O woman soul, what light, what power revealed,

Working the rapid marvels of this day,

Opens for us by thee a happier age?"

SHP-54 of Feb23

तो **'वही'** है ये अगर, जग नाम **'जिसका'** सुन रहा—

फिर कहां आश्चर्य कुछ भी सुखद-वर्तन पर यहां !!

सहज होता हर अलौकिक कार्य परमानन्द से—

है रसायन-सिद्ध, **'उसके'** कल्पकारी-प्रेम का !!

तब पुरोहित-संत जैसे एक आगत ने कहा—

"देवि ! कैसी ज्योति, कैसी शक्ति प्रकटी थी यहां ?

सिद्ध करती आज की द्रुत चमत्कारी-श्रृंखला—

खोलती द्वारा तुम्हारे एक सतयुग को यहां" ?

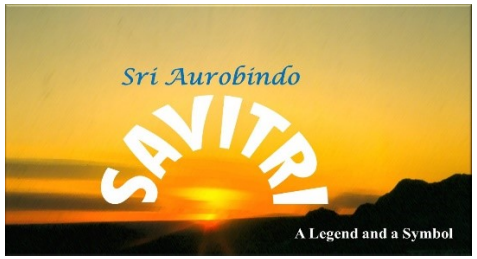

Savitri B12 Epilogue P723-724 (AD)

Her lashes fluttering upwards gathered in

To a vision which had scanned immortal things,

Rejoicing, human forms for their delight.

They claimed for their deep childlike motherhood

The life of all these souls to be her life,

Then falling veiled the light. Low she replied,

SHP-54 of Feb23

एकाग्र **'उसने'** कर लिया निज गगनगामी-दृष्टि को

उस बोध पर, जिसने अमरता का परा-दर्शन किया !

खींच कर शिशु-मानवों को मोद से था भर दिया !

बालपन से मांगते अधिकार अपनी **'मातु'** से—

बन सकें जीवन **'उसी'** का, आत्मायें ये सभी;

तब ज्योति पलकों से ढंकी; अति-मंद **'उसने'** यूं कहा—

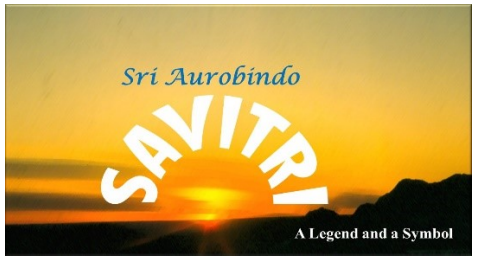

Savitri B12 Epilogue P723-724 (AD)

"Awakened to the meaning of my heart

That to feel love and oneness is to live

And this the magic of our golden change,

Is all the truth I know or seek, O sage."

SHP-54 of Feb23

“निज-हृदय में सत्य के गूढ़ार्थ को मैं जानती—

अनुभूत करना **‘प्रेम’** को, **‘एकत्व’** को जीवन यही **!!**

औ’ यही जादू हमारे **‘दिव्य-कायाकल्प’** का **!!**

संत, बस इतना परम-सत् जानती-मैं-खोजती” ।।